श्री गणेश वन्दना

दोहा- गौरी सुत गणराज के, धरूँ चरण में ध्यान ।
आज सभा में आईज्यो, राखिज्यो थे मान ।।

तर्ज : छम छम नाचे...

गणपत जी ने पहल्याँ पोत है मनाणो,
सारी सिद्धियाँ को भाया, एक ही ठिकाणो ।। टेर ।।

हाथी सो बदन आँकी मूसे की सवारी,
पहल्याँ पोत ध्यावे आने दुनिया या सारी,
चलन योही है भाया, बरसां पुराणो ।। १ ।।

घणो मोटो पेट आने लाडुड़ा ही भावे,
प्रेम सुं जिमाल्यो ऐतो रुच रुच खावे,
लाडुड़ां को थाने भाया, भोग ही लगाणो ।। २ ।।

बेगो सो मनाले आने हो जासी पौ बारा,
अन्न-धन्न लिक्षमी सुं भरसी भण्डारा,
''हर्ष'' आने तो भाया, मन सुं रिझाणो ।। ३ ।।

श्री गणेश वन्दना

दोहा- गजाननं भूत गणादिसेवितम,
कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकम्,
नमामि विघ्नेश्वरपादपंङ्कजम् ।।

तर्ज : जिसको तेरा भरोसा ...

वंदन प्रभु हमारा, बस आपके चरण में,
मिलती है सारी खुशियाँ, बस आपकी शरण में ।। टेर ।।

प्रभु आप की कृपा से, शुभ काम सारे होते,
बाधायें दूर होती, सब विघ्न दूर होते,
हमने तो सर झुकाया, बस आपके नमन में ।। १ ।।

हमने भी आपका ही, सुमिरन प्रथम किया है,
चरणों में गौरीनन्दन, वंदन प्रथम किया है,
बरसे है रस की बून्दे, बस आपके भजन में ।। २ ।।

रखदो हमारे सिर पे, किरपा का हाथ ऐसे,
चातक को हे गजानन, स्वाति मिली हो जैसे,
है ''हर्ष'' रिद्धि सिद्धि, बस आपकी छुअन में ।। ३ ।।

श्री गुरु वन्दना

तर्ज : म्हारे सिर पर है बाबाजी रो हाथ...

म्हाने थे ही दिखाया खाटू धाम,
मिलाया बाबो श्याम,
गुरुजी म्हारा चोखा मिल्या ।। टेर ।।

घणां दिनां तक बिन गुरु मै तो भटक्यो मार्‌यो मार्‌यो,
जां दिन सुं थारी शरण मैं आयो जीवन सुधर्‌यो म्हारो,
म्हारे हाथां ने थे ही लीन्यो थाम ।। १ ।।

जद जद कोई आफत आई ढांढस आप बंधाया,
बालकियां की भूल चूक ने मन सुं आप भुलाया,
कइयां भूलां म्हें थारो अहसान ।। २ ।।

ध्यान धरम और सेवा पूजा जप तप नेम सिखाया,
सत्य अहिंसा को सद्‌गुरुजी म्हाने पाठ पढ़ाया,
म्हारो थे ही करोगा कल्याण ।। ३ ।।

बड़भागी माणस ही जग में साँचो गुरुवर पावे,
गुरु कृपा सुं ''हर्ष'' वो माणस भव सागर तर जावे,
थारे चरणां में बारम्बार प्रणाम ।। ४ ।।

श्री पितरेश वन्दना

तर्ज : कस्म वादे...

पित्तर जी थारो नाम बड़ो है,
भोत बड़ी सकलाई जी,
विपदा की घड़ियां में देवा,
आप ही करो सहाई जी ।। टेर ।।

पैण्डे में थारे नाम को जो नर दिवलो रोज चसावे है,
थारी दया सुँ ऊंके घर में आफत कदे ना आवे है,
टाबरियाँ की भूल चूक ने थे ही सदा भुलाई जी ।। १ ।।

मावस ने जो सिद्धो काडे पैण्डे घण्टी ढ़ाले जो,
ब्राह्मण ने जो भोज करावे छूतो रोज निकाले जो,
ऊँके घर में बणी रह्वे है लिक्षमी सदा सवाई जी ।। २ ।।

ब्याह के पहल्यां रात जगे की देवा रीत पुराणी है,
भोज सुँ पहल्याँ पातल निकले होवे थारी पहरानी है,
''हर्ष'' कह्वे थे हरदम थारे कुल की बेल बढ़ाई जी ।। ३ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(जय माँ काली)

तर्ज : बीरा बेगा बेगा सा थे...

तेरे दर्शन को मैं आऊँ,
तोहे लाल चूनड़ी चढ़ाऊँ माँ ।। टेर ।।

तेरा तेज बड़ा ही निराला,
सोहे गल पुष्पों की माला,
तेरे चरणन शीश नवाऊँ माँ ।। १ ।।

तेरा भवन लेक में प्यारा,
बहती करुणा की धारा,
तुझे नारियल फूल चढ़ाऊँ माँ ।। २ ।।

जो शरण तुम्हारी लेवे,
तू मन इच्छा फल देवे,
तेरा शरणागत बन जाऊँ माँ ।। ३ ।।

सच्चा दरबार तुम्हारा,
चरणों में नमन हमारा,
मैं ''हर्ष'' तेरे गुण गाऊँ माँ ।। ४ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(जय माँ काली)

तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर...

माँ काली ने गुरुदेव को आकर दिया आदेश,
मेरा मंदिर बनवाओ, मेरी मूरत लगवाओ,
देखेगी दुनिया होगा वो मेरा भवन विशेष,
मेरा मंदिर बनवाओ, मेरी मूरत लगवाओ ।। टेर ।।

चिंता करो ना बिल्कुल, माँ ने बताया,
मंदिर बनेगा निश्चित, ये मेरी माया,
अपने आप ही धन आयेगा निशदिन नित्य हमेश ।। १ ।।

अप्रैल की तेरह तारिख, उन्नीस सौ उन्नचांस,
स्थापित हुई थी मूरत, दिन था बड़ा खास,
उस मूरत में काली माँ ने आके किया प्रवेश।। २ ।।

संगे मरमर का मन को, मोहने वाला,
''हर्ष'' हुआ ना ऐसा, भवन निराला,
बायें गुरुवर मध्य में काली दायें विराजे महेश ।। ३ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(जय माँ काली)

तर्ज : मुझे प्यार की जिन्दगी....

शरण माँ की ले ले, तेरे दुख कटेगें,
ख़ुशियों के बादल, बरस के रहेगें ।। टेर ।।

जमाने के कदमों में, भटकता तू आया,
ठोकर सिवा बन्दे, बता दे क्या पाया,
तु वंचित है जिनसे, वो सब सुख मिलेगें।। १ ।।

भले वक्त में माँ की, याद ना आई,
मगर भोली माँ तुझको, भूल ना पाई,
मैया अटल है बेटे, भटकते रहेगें ।। २ ।।

समय है मिजाजी, बदलता ही आया,
कभी सुख की बरखा, कभी गम का साया,
माँ की दया से ''हर्ष'', सदा हम हँसेगे ।। ३ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(जय माँ काली)

तर्ज : कन्हैया ले चल परली पार...

सीढ़ियाँ चढ़ चल माँ के द्वार,
तुझे बुलाये दक्षिणा काली, माँ अपने दरबार ।। टेर ।।

बैठी है जगदम्बा उपर,
वहाँ तू जाना सीढ़ी चढ़कर,
धवल श्वेत है संगे-मरमर,
निज भगतों का अपने भवन में, मैया को इंतजार ।। १ ।।

नीचे पृथ्वी लोक है प्यारे,
उपर देव लोक तू जा रे,
ऋषी लोक के अजब नजारे,
सबसे उपर स्वर्ग लोक है, हो जाये उद्धार ।। २ ।।

इधर दर्द है उधर दवा है,
इधर झमेले उधर दया है,
इधर अकेला उधर में माँ है,
शरणागत का ''हर्ष'' भवानी, करती है उपकार ।। ३ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(जय माँ काली)

तर्ज : बसाले मन मंदिर में राम...

सुमिर ले माँ काली का नाम,
बनेगें तेरे बिगड़े काम।। टेर ।।

पलपल जीवन की अब तेरे, ढ़लती जाये शाम हो,
श्री चरणों का ध्यान लगाले, बैठा क्युं निष्काम ।।
सुमिर ले ....।। १ ।।

झूठे जग के झूठे नाते, सांचा माँ का नाम हो,
माता के आँचल में बंदे, बसते चारों धाम ।।
सुमिर ले....।। २ ।।

दर दर प्यारे भटक रहा क्युं, बिन कारण बिन काम हो,
दक्षिणा काली के मंदिर में, सबको मिले आराम ।।
सुमिर ले....।। ३ ।।

आदि शक्ति ये मात भवानी, सर्व गुणों की खान हो,
''हर्ष'' कहे शरणागत को माँ, देती आँचल छाँव ।।
सुमिर ले.... ।। ४ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर ...

कान्धे बस्तो लादके चाली सखी सहेल्याँ साथ,
नाराणी पढ़बा चाली, पढ़ाई करबा चाली ।। टेर ।।

माँ बापु आशीष दीन्हो, नाम कमाजे,
लाडो पढ़ाई मांही, अब्बल तू आजे,
बुद्धि और विद्या की होवे, जीवन में बरसात।। १ ।।

पाँव धोक ले मायत का, लाडो युँ बोली,
कोन्या कराऊँ थारी, जग में ठिठोली,
नाम थारो मैं ऊँचों करस्युँ, देस्युँ या सौगात ।। २ ।।

करके कलेवो बाई, पाठशाला चाली,
कलम-दवात-कापी, बस्ते में घाली,
एक हाथ में पट्टी पकड़ी, पुस्तक दूजे हाथ।। ३ ।।

छोटे-छोटे हाथां माहीं, बस्तो उठावे,
छोटी छोटी छोरयां सागे, पढ़बा ने जावे,
''हर्ष'' सहेल्याँ सागे जाके, सीखे ज्ञान की बात ।। ४ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

तर्ज : सैयां ले गई जिया...

जीमो जीमो जी सगाजी, सज्जन गोठ जरा,
आओ आओ जी म्हें थारी, मनवार करां ।। टेर ।।

बरफी - कलाकंद - रसगुल्लो,
लाडु-इमरती - हलवो ल्यो,
भुजिया - समोसा - दही - बड़ा,
पापड़ - पकोड़ी, काँजी-बड़ा,
साँख जलेबी तांई मुण्डो, खोलो तो जरा ।। १ ।।

गट्टा – साग है – सांगर को,
जायको - चाखल्यो - मोगर को,
आलु - दाल है - पंचमेला,
मीठा - भात है - अलबेला,
कैर सांगरी - फली फालरी, चाखो तो जरा ।। २ ।।

कुल्फी - साथ में फालुदा,
रबड़ी - मलाई - केशरिया,
खाटो - छुआरा - पाचक है,
चूरी - बड़ी मुख रोचक है,
''हर्ष'' कह्वे नागरियो बीड़ो, चाबो तो जरा ।। ३ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

तर्ज : गिरधर मेरे मौसम आया...

झुझणुं वाली, दादी तेरा, सच्चा ये दरबार है,
तुझे मनाये, निशदिन ध्याये, तेरा ये परिवार है ।। टेर ।।

बहुत बड़ी दिलदार माँ, मांगो सो पाओ,
बेटा पोता धन दौलत, आके ले जाओ,
शरण में आ भी जा, चरण में सर झुका,
जो खाली दामन आयेगें, वो झोली भर ले जायेगें ।। १ ।।

सेवा में हाजिर खड़े, सेवक तेरे माँ,
चरणों में कुर्बान है, तन मन धन और जाँ,
हमें तो जो मिला, माँ तुमसे ही मिला,
सदा ही तुमसे पाया है, हमेशा तुमसे पायेगें ।। २ ।।

''हर्ष'' तेरे दरबार की, महिमा है भारी,
भगतों की तूने सदा, विपदा है टारी,
तुम्हारी आस है, तेरा विश्वास है,
भवानी जीवन भर हम तो, तुम्हारी महिमा गायेगें।। ३ ।।

श्री राणी सतीजी वन्दना

(चुनड़ी)

तर्ज : ग्यारस चानण की आई...

टाबरिया चूनड़ ल्याया, थाने उढ़ाबा आया,
ओढ़ो मैया जी घणे चाव सूँ ।। टेर ।।

झीणो झीणो सो थारो ''पोत मंगाया जी-२''
सोणी सी लाल सुरंगी ''चुनड़ी रंगाया जी''-२,
गोटा, किनारी सोवे, लम्पी लूमा मन मोवे,
थाने उढ़ास्याँ मैया भाव सूँ ।। १ ।।

चान्दी सिहासन जननि ''आप विराजो जी''-२,
बेटां को हे जगदम्बा ''मान बढ़ादयो जी''-२,
मोत्याँ को जाल बिछायो, साँचो माँ माल लगायो,
थाने उढ़ास्याँ घणे मान सूँ ।। २ ।।

थारो सिणगार भवानी ''मनड़ो लुभावे जी''-२,
देखो टाबरिया थाने ''चुनड़ी उढ़ावे जी''-२,
घर में माँ आज पधारी, जावां हाँ म्हें बलिहारी,
''हर्ष'' उढ़ास्याँ थाने नाज सूँ ।। ३ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

तर्ज : मीठे रस सुं भरयोड़ी...

थारी यादड़ली सतावे बेटो रात्युं जागे,
दादी झुझंणु बुलाल्यो थारो कांई लागे।। टेर ।।

जातां देखुं सगला ने माँ मेरो जी ललचावे,
बाट उड़ीकुँ कदसी दादी मेरो नम्बर आवे,
दादी धोक लगास्युँ थारे मण्ड आगे ।।
दादी झुझंणु बुलाल्यो... ।। १ ।।

रोली मोली लाल चून्दड़ी मेहन्दी सागे ल्याऊँ,
बुंदि भुजिया खीर और पूड़ा थारे भोग लगाऊँ,
लेके आस्युँ दादी घर का ने सागे ।।
दादी झुझंणु बुलाल्यो... ।। २ ।।

किरपा करद्यो दादी जी थे मेरी आस पुराओ,
''हर्ष'' कह्वे मां सिर पर मेरे थारो हाथ फिराओ,
मैया थारी ही दया सुं दुख दूर भागे।।
दादी झुझंणु बुलाल्यो... ।। ३ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

तर्ज : धमाल

बाई नाराणी परणीजे, आँगण खुशियां छाई रे,
वरमाला की घणी सुहाणी, बेला आई रे ।। टेर ।।

यार भायला के संग तनधन, महम डोकवा आया जी,
लाडेसर नाराणी होसी आज पराई रे ।।
बाई नाराणी परणीजे... ।। १ ।।

घोड़ी उपर दूल्हो बैठ्यो, सुसरो आय उतारे जी,
आज कुंवर को करे आरतो गंगा माई रे ।।
बाई नाराणी परणीजे... ।। २ ।।

तनधन जी की आख्याँ मांही, सासु सुरमो घाले जी,
नीम झुआरी की पाछे फिर रस्म निभाई रे ।।
बाई नाराणी परणीजे... ।। ३ ।।

बीन्द बीन्दणी इक दूजे ने, वरमाला पहरावे जी,
''हर्ष'' करे फूलां की बरखा लोग लुगाई रे।।
बाई नाराणी परणीजे... ।। ४ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

तर्ज : आज मेरे यार की शादी हैं...

बीन्द बण तनधन आया जी,
गुरसामल के द्वारे तोरण मारण आया जी ।। टेर ।।

कमर में फेटो बान्ध्यो,
शीश पर सेहरो साज्यो,
बदन सोवे शेरवानी,
जूतियाँ राजस्थानी, होऽऽऽऽ
भाई बंधु कुटुम्ब कबीलो सागे ल्याया जी ।। १ ।।

बारणे बैण्ड बाजे,
ठुमकणी घोड़ी नाचे,
लुगायां गीत गावे,
बराती ठुमका लगावे, होऽऽऽऽ
नाराणी ने वरमाला पहरावण आया जी ।। २ ।।

खड़यो ड्योढ़ी पे जंवाई,
सासु माँ थाल ल्याई,
तिलक माथे पर काढ़े,
बीन्द की छाती नापे, होऽऽऽऽ
''हर्ष'' कह्वे प्यारी लाडो ने व्यावण आया जी ।। ३ ।।

श्री शिव वन्दना

दोहा- शिव समान दाता नहीं विपद विदारण हार ।
लज्जा सबकी राखियो शिव बैलन असवार ।।

तर्ज : जिन्दगी प्यार का गीत है...

बैठे भूतों के स्वामि यहाँ, इनके चरणों में आना पड़ेगा,
गंगा जल बेल पत्री तुझे, शिव लिंग पे चढ़ाना पड़ेगा ।।

काशी नगरी के वासी यही,
काली नगरी विराजे यही,
ज्योर्तिलिगों सी महिमा यहीं,
इन्हें दिल से रिझाना पड़ेगा ।। १ ।।

पावन गंगा का तट है यहाँ,
पास मंदिर के मरघट यहाँ,
होती सुनवाई झटपट यहाँ,
आके सर को झुकाना पड़ेगा ।। २ ।।

काला टीका लगालो अगर,
सारे संकट हो छू मंतर,
होगी आसान जीवन डगर,
इन्हें अपना बनाना पड़ेगा ।। ३ ।।

लाखों भगतों का विश्वास है,
तारा शक्ति खड़ी पास है,
सोम का दिन बड़ा खास है,
''हर्ष'' चौखट पे आना पड़ेगा ।। ४ ।।

श्री शिव वन्दना

(शिव की बारात)

तर्ज : ये माना मेरी जां...

दोहा- देखो देखो ये नजारा ये निराली सी रात ।
दर पे शंकर बारात लेके आये हैं ।।
बैठे सजधज के बूढ़े बैल नन्दी पर ।
देव प्रेत किन्नर उनके साथ आये हैं ।।

अरी मैना रानी, जरा मुड़के देखो,
वो ड्योढ़ी पे तेरे, बारात आ गई है,
बने दूल्हा भगवन, तो दुल्हन भवानी,
विवाह की ये पावन, रात आ गई है ।। टेर ।।

वो भष्मी रमाये, खड़ा डमरुवाला,
जटाओ में गंगा, गले नाग काला-२,
बदन आधा नंगा, है माथे पे चन्दा,
लो भूतों की टोली साथ आ गई है ।। १ ।।

मगन नन्दी नाचे, बंधे पाँव घुघंरु,
डमा डम है बाजे, भोले का डमरु-२,
बने ब्रह्मा विष्णु, है शिव के बाराती,
धरती पे मानो हयात आ गई है ।। २ ।।

(२)

कोई गांजा खीचें, चिलम कोई टाने,
कोई खाये अम्मल, कोई भांग छाने -२,
कहीं कोई औघड़, कहीं पे अघोरी,
फकीरों की मानो जमात आ गई है ।। ३ ।।

जोड़े में सजकर, गवरजा जो आई,
देख वेश शिव का, वो मुस्कुराई-२,
प्रभु के गले में, जो वरमाला डाली,
जीवन में सुख की प्रभात आ गई है ।। ४ ।।

कहे ''हर्ष'' आई, ये शिवरात प्यारी,
हुई पुष्प बरखा, अम्बर से भारी-२,
बने एक दूजे, के शिव और शक्ति,
मिलन की अनोखी रात आ गई है ।। ५ ।।

दोहा- सितारों से ऊँचा है रुतबा तुम्हारा ।
समझलो हमारी दुआ का इशारा ।।
एक बिजली सी चमकी दिल रौशन हो गये ।
कुछ तुमने कुछ तुम्हारी अदाओं ने मारा ।।

श्री शिव वन्दना

तर्ज : सौ साल पहले...

दुनिया बनाने वाले, ''तेरा उपकार है''-२,
तुमसा ओ भोलेदानी दूसरा नहीं है,
बंदों को तेरे बाबा, ''तेरा ही आधार है''- २,
तुमसा ओ भोलेदानी दूसरा नहीं है।। टेर ।।

धर सन्यासी का वेश, प्रभु तुम धूनी अलख जगाते,
तेरे बैठन को मृगछाल, बदन पे बाघम्बर लिपटाते,
जटाओं में तेरे सोहे ''गंगा की धार है''-२।। १ ।।

देवों की खातिर नीलकंठ, तूने विष का पान किया,
भष्मासुर जैसे दानव को, अद्‌भुत वरदान दिया,
याचक को देने खातिर ''सदा तैयार है''–२।। २ ।।

कहीं हिम शिखरों पे नाथ, तेरा कैलाश पे डेरा है,
कहीं जंगल गुफा पहाड़, कहीं शमशान बसेरा है,
भूतनाथ बाबा तेरा ''सच्चा दरबार है''-२।। ३ ।।

दुनिया को चलाने का, दयालु भार तुम्ही रखते हो,
जब तीजा नैन खुले, प्रभु संहार तुम्ही करते हो,
''हर्ष'' चरण में तेरे ''नमन बार बार है''-२ ।। ४ ।।

श्री शिव वन्दना

तर्ज : ना झटको जुल्फ से पानी...

चढ़ाले लोटा जल भरके, तेरा कल्याण हो जाये,
कंटीली राह जीवन की, तेरी आसान हो जाये ।। टेर ।।

बड़े भोले मेरे भगवन, न दूजा आपसा दानी,
बिना सोचे ही दे देते, न दूजा आपका सानी,
शरण में आ भी जा पूरे, तेरे अरमान हो जाये ।।
चढ़ाले लोटा जल भरके... ।। १ ।।

बना सोने या चाँदी का, भले जल-पात्र ना तेरा,
अगर श्रद्धा से हो लबलब, चढ़े क्षण मात्र में तेरा,
तेरे दुखड़े मिटाने का, भगत फरमान हो जाये ।।
चढ़ाले लोटा जल भरके... ।। २ ।।

बड़ा प्यारा है जल इनको, हमेशा शीश पर धारे,
तू भर के भाव की गगरी, भगत चौखट पे आजा रे,
हमेशा ''हर्ष'' खुशियों के, तेरे दिनमान हो जाये ।।
चढ़ाले लोटा जल भरके... ।। ३ ।।

श्री शिव वन्दना

तर्ज : भगत के वश में है भगवान...

जपो रे ॐ नमः शिवाय -२,
अजब अनोखी माया शिव की, महिमा वरणी ना जाये ।।

मेरा भोला है दानी, नहीं दूजा वर-दानी,
ये पल में खुश हो जाते, नहीं कोई इनका सानी,
भक्त था एक शिव का, मगर किस्मत का मारा,
''अच्छे हालात नहीं थे, बड़ा मुश्किल था गुजारा''-२
जवां बहन और बूढ़ी माँ का था वो एक सहाय ।। १ ।।

जो कुछ भी जोड़ के रखा, खतम सब हो गया था,
दौर फाकों का भगतों, शुरु अब हो गया था,
पड़ी बिस्तर पे मैया, वैद्य घर में बुलाया,
''खर्च की बात सुनकर, पसीना उसको आया''-२
बिन पैसों के रोग मिटे ना क्या वो करे उपाय ।। २ ।।

हो घर में सोना चान्दी, हाल ऐसे नहीं थे,
तोड़ कर गुल्लक देखा, पैसे पूरे नहीं थे,
उसने मन में ये सोचा, ये जीना कैसा जीना,
''ऐसे जीने से बेहतर, अच्छा मेरा मर जाना''-२
माँ बहना का फिर क्या होगा चिन्ता उसे सताय ।। ३ ।।

(२)

मन ही मन खुद को कोसा, ये मैंने क्या है सोचा,
पड़े चाहे कुछ करना, मगर लाऊँगा पैसा,
रात आधी ढ़ली थी, वो घर से बाहर आया,
''पास में एक शिवालय, नजर उसको है आया''-२
चकाचौंध मंदिर की ऐसी आँखे चुन्धिया जाये ।। ४ ।।

बड़ा सा शिवलिंग प्यारा, शीश बहती जल धारा,
पास गिरजा की मूरत, गौद में गणपति प्यारा,
वीर हनुमान साजे, हाथ में गदा विराजे,
''भैरों चरणों में बैठे, नान्दिया छम छम नाचे''-२
वन्दन कर बोला हे बाबा क्युँ इतना तड़पाये ।। ५ ।।

ज्युँही उपर को देखा, पापी मन ललच गया था,
घण्टा सोने का सुन्दर, बीच में लटक रहा था,
नजर चहुँ ओर घुमाई, नजर कोई ना आया,
''उतारूँ कैसे इसको, सोच के वो चकराया''-२
कैसे इसको घर ले जाऊँ युक्ति समझ न आये ।। ६ ।।

(३)

कौन है देखने वाला, किसे मालुम पड़ेगा,
अगर घण्टा चुराने, वो शिव के शीश चढ़ेगा,
बात ये समझ में आई, तो मन ही मन मुस्काया,
''पैर शिव लिंग पे रख कर, घण्टे को हाथ लगाया''-२
घण्टा घन घन बोल उठा झट प्रगट हो शंभु आये ।। ७ ।।

बोले खुश होकर शिव जी, कोई जल दूध चढ़ाये,
कोई बेल पत्तियां लाये, कोई चन्दन महकाये,
तूने तो खुद को बालक, चढ़ाया मेरे ऊपर,
''मैं खुश हूँ आज तुझसे, मांगले मन चाहा वर''-२
माँ की सेवा करने वाला चोर नहीं कहलाये ।। ८ ।।

माँ का तू लाल है सच्चा, करूँ तेरी मैं रक्षा,
जो कुछ भी मन में आवे, मांग ले आज तु बच्चा,
वो बोला वाह रे भोला, नहीं तुझसा कोई दूजा,
''अगर देना ही है तो, दे दे चरणों की पूजा''-२
दान भक्ति का देकर, वो अर्न्तध्यान हुए हैं,
चोर के मन अर्न्तमन में, प्रभु के भाव जगे हैं,
बिछा मन्दिर में आसन, लगा वो शिव को ध्याने,
''बड़ा ही सुन्दर सुखमय, लगा जीवन बिताने''-२
''हर्ष'' कहे ये महामंत्र है भव से पार लगाये ।। ९ ।।

श्री हनुमत वन्दना

तर्ज : बार बार तोहे क्या समझाये...

धोक लगावण आयो थारे, ले सारो परिवार,
करियो बाला जी, पूजा मेरी स्वीकार ।। टेर ।।

विधि नियम ना जाणु बाबा माफ करो,
भूल चूक बिसराओ मनड़ो साफ करो,
एक सहारो थारो म्हाने थारो ही आधार ।।
करियो बाला जी...।। १ ।।

झुक झुक थारे चरणां धोक लगाई है,
रुच रुच जीमो सवामणी करवाई है,
मंशा पूरण करियो थांसू अरजी बारम्बार ।।
करियो बाला जी...।। २ ।।

भोग लगायो ब्राह्मण भोज करायो है,
दान दक्षिणा दीन्ही आशीष पायो है,
थारी किरपा सुं करवास्याँ ब्रह्मपुरी सरकार ।।
करियो बाला जी...।। ३ ।।

आशीष देकर राजी राजी विदा करो,
''हर्ष'' दयालु थारी किरपा सदा करो,
सालुंसाल बुलाओ म्हाने सालासर दरबार ।।
करियो बाला जी...।। ४ ।।

श्री हनुमत वन्दना

तर्ज : अटक्योड़ी नाव पार करनी पड़सी...

पलक्यां उघाड़ो थारो टाबरियो खड़्यो,
सालासर हनुमान थारी शरणां पड़्यो ।। टेर ।।

भोत सह्यो इब, सह्यो नहीं जावे,
बिन बोल्यां बाबा, रहयो नहीं जावे,
संकट मोचन आओ मेरी विपदा हरो ।।
सालासर हनुमान थारी... ।। १ ।।

मझधारा में, मन घबरायो,
लाख जतन कर, खे नहीं पायो,
लहरां के थपेड़ां सुं मैं एकलो लड़्यो ।।
सालासर हनुमान थारी... ।। २ ।।

दुखड़ां सुं मै तो, टूट गयो हूँ,
जीवन सूं बाबा, ऊब गयो हूँ,
सूझे कोनी आप कोई रस्तो करो ।।
सालासर हनुमान थारी... ।। ३ ।।

शरणागत की, करल्यो सुणाई,
''हर्ष'' चरण में, अरजी लगाई,
किरपा को हाथ मेरे सिर पे धरो ।।
सालासर हनुमान थारी... ।। ४ ।।

श्री हनुमत वन्दना

तर्ज : मेरा दिल ये पुकारे आजा....

म्हारी नाव पड़ी मझधारा, थारे चरणां अरज गुजारां,
आओ सालासर सरदार, म्हारो करद्यो बेड़ो पार ।।

आंधियाँ में प्रभु, नाव खे ना सकुं, ना सकुं,
जोर चाले नहीं, नाथ मैं के करुं, के करुं,
हाथां छूटी पतवार, म्हारा थे ही खेवनहार,
थाने रो रो आज पुकारां ।।
आओ सालासर सरदार... ।। १ ।।

कोई संगी नहीं, डर लागे घणो, हाँ घणो,
कुण सुणसी बता, गर थे ना सुणो, ना सुणो,
दोन्यु हाथां ने पसार, थाने ध्यावां बारम्बार,
बाबा संकट हरियो म्हारा ।।
आओ सालासर सरदार... ।। २ ।।

''हर्ष'' थारे सिवा, पीड़ कीने कहुँ, मैं कहुँ,
साँचे मन सुं धणी, नाम थारो जपुं, मैं जपुं,
म्हारी सुणियो पुकार, म्हारो करियो उद्धार,
थारी कदस्युं बाट निहारां ।।
आओ सालासर सरदार... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

तर्ज : ऐसी मस्ती कहां मिलेगी...

संजीवन लेने बजरंगी, पवन वेग से आये,
पर्वत हाथ उठाये,
ढूंढ़ ढूंढ़ कर हार गये जब,
बूंटी खोज न पाये, पर्वत हाथ उठाये ।। टेर ।।

नील गगन में लगा कि मानो, एक भूचाल सा आया,
समझ के दानव भाई भरत ने, झटपट तीर चलाया,
पांव में तीर लगा वो घायल, होके धरा पर आये,
पर्वत हाथ उठाये ।। १ ।।

मुख से राम का नाम सुना तो, भरत युँ पूछन लागे,
कोन हो तुम और कहां से आये, जाना कहाँ है आगे,
लक्ष्मण की मुर्छा का किस्सा, हनुमत उन्हें सुनाये,
पर्वत हाथ उठाये ।। २ ।।

सुबह की पहली किरण के पहले, मुझको वहाँ है जाना,
घायल कैसे उड़ पायेगा, भाई जरा बताना,
भरत जी बोले तीर पे बैठो, ये तुझको पहुंचाये,
पर्वत हाथ उठाये ।। ३ ।।

सूरज उगने वाला था प्रभु, राम का दिल घबराया,
उसी समय संजीवन लेकर, कपि वहाँ पर आया,
''हर्ष'' कहे रघुनन्दन उनको, अपने गले लगाये,
पर्वत हाथ उठाये ।। ४ ।।

श्री हनुमत वन्दना

तर्ज : मुखड़ा - फेविकोल..अन्तरा - फूलों सा चेहरा...

सुनिये सुनाऊँ राम जी के नाम की माया,
पत्थर पे राम जो लिखा वो डूब ना पाया,
चाहे सुबह हो या शाम, जपे राम राम राम,
इस राम नाम मंत्र को हनुमान ने ध्याया,
किये हनुमत ने पूरे सब काम, सहारा लेके राम नाम का,
किये दुष्टों का काम तमाम, सहारा लेके राम नाम का ।।

आँखों में सूरत, हृदय में मूरत, रघुवर सिवा ना, कोई जरुरत,
दिये सीने को चीर सरेआम, सहारा लेके राम नाम का ।। १ ।।

माता सिया की, सुध लेके आये, बूंटी न पाये तो, पर्वत उठाये,
दिये लक्ष्मण को जीवन का दान, सहारा लेके राम नाम का ।। २ ।।

तरुवर उखाड़े, दानव पछाड़े, लंका जलाके, हुलिया बिगाड़े,
किये रावण का जीना हराम, सहारा लेके राम नाम का ।। ३ ।।

चारों युगों में, बाबा की माया, ''हर्ष'' कोई भी, पार न पाया,
हुए भगतों में ये सरनाम, सहारा लेके राम नाम का ।। ४ ।।

श्री दशावतार वन्दना

तर्ज : है प्रीत जहाँ की रीत...

दस बार प्रभु ने लीला की, सब वेद पुराण बताते हैं,
हम परम पिता नारायण के, वो दस अवतार गिनाते हैं,
जय हो जय हो, जय हो जय हो, जय हो जय हो, जय जय हो ।।

आदिकाल में सबसे पहले, मत्स्य का अवतार लिये,
हयग्रीव का जल में वध किया, और वेदों का उद्धार किये,
जब सत्यव्रत ने ध्यान धरा, तब मछली रूप में आते हैं ।। १ ।।

कच्छप रूप में भगवन ने, मन्दराचल पीठ पे धार लिया,
अमृत के खातिर देवों और, दानव में जब तकरार हुआ,
तब लीला रचकर देवो को, वो अमृत पान कराते हैं ।। २ ।।

हिरणाक्ष को जल में मार दिया, जब वाराह रूप बनाये थे,
पाताल में डूबी धरती को, दाढ़ों पर लेकर आये थे,
अपने खुर से जल रोक दिया, पृथ्वी स्थापित करवाते हैं ।। ३ ।।

भक्त प्रह्लाद की रक्षा हेतु, नरसिंह का अवतार लिया,
दानव राजा को जघां पर, बैठा कर सीना फाड़ दिया,
हिरणाकश्यप का वध करने, वो खम्भ फाड़ कर आते हैं ।। ४ ।।

(२)

इन्द्र देव के भाई बन कर, वामन रूप में जनम लिये,
तीन कदम भूमि बलि से वो, दान रूप में मांग लिये,
सूतल का राज दिया बलि को, और इन्द्र को स्वर्ग दिलाते हैं ।। ५ ।।

संत ऋषि जमदग्नि के घर, परशुराम ने जन्म लिया,
पृथ्वि का भार बने थे जो, उन भूपों का संहार किया,
उस काल में इक्कीस बार धरा, को क्षत्रीय हीन बनाते हैं ।। ६ ।।

त्रेता युग में दशरथ के घर, राम रूप में आये थे,
पापी बाली का बध करके, सुग्रीव को राज दिलाये थे,
लंका देकर विभीषण को, वो अवधपुरी को आते हैं ।। ७ ।।

द्वापर में बन कृष्ण कन्हैया, कंस का वो संहार किये,
माँ देवकी के वो जन्म लिये, और यसुधा के नन्दलाल बने,
वृज की भूमि पर वास किया, और लीला मधुर दिखाते है ।। ८ ।।

पशुओं का वध रोकने हेतु, हरि ने बुद्ध अवतार लिया,
जीवों की अहिंसा का जग में, गोतम बुद्ध ने प्रचार किया,
अभिमान, राग और द्वेष-तृष्णा, त्याग का पाठ पढ़ाते हैं ।। ९ ।।

''हर्ष'' कहे प्रभु कलिकाल में, कलकी रूप में आयेंगे,
शम्भल ग्राम में विष्णुयश के, घर में जन्म वो पायेगें,
कलयुग में कल्की प्रगटेगें, ये धर्म शास्त्र बतलाते हैं ।। १० ।।

पारिवारिक आयोजन

(बहुराणी)

तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर ...

नई नवेली बहु लगावे चरणां थारे धोक,
माँ सिर पर हाथ फिराओ, बहु का लाड लडाओ।। टेर ।।

थारी दया सुं दादी, बेटो म्हें ब्याया,
स्वागत में दादी थारो, किर्तन कराया,
घणे चाव सुँ आज पुराया, दादी चंदन चौक।।
माँ सिर पर हाथ..।। १ ।।

बेटी बराबर दादी, भऊ राणी आई,
कोन्या म्हें समझां ईने, म्हांसु पराई,
इंके कदे माँ चुभ ना पावे, सुई की भी नोक।।
माँ सिर पर हाथ..।। २ ।।

मायत की जइयाँ ईंका, लाड लडास्याँ,
जद भी या जाणो चावे, मायके भिजास्याँ,
ईं घर में ना कोई बंदिश, ना कोई भी टोक।।
माँ सिर पर हाथ..।। ३ ।।

थारी दया सुँ म्हारी, वंश बेल बढ़सी,
''हर्ष'' भवानी तू ही, आस पूरी करसी,
पोते को माँ मुँह दिखलाजे, सुधरेलो परलोक।।
माँ सिर पर हाथ..।। ४ ।।

पारिवारिक आयोजन

(बेटी की विदाई)

तर्ज : फूल तुम्हें भेजा है खत में...

छोड़ चली है दामन तेरा बाबुल ये लाडो तेरी,
कर्जदार तेरी ममता की आज हुई नस नस मेरी ।। टेर ।।

हाथ पकड़ कर बड़ा किया है लाड़ प्यार से पाला है,
गोद बिठाकर निज हाथों से तूने दिया निवाला है,
हर पल हर क्षण साथ में मेरे ''साया बन कर रहते थे''-२,
बेटे से बढ़कर है बेटी दुनिया से ये कहते थे ।। १ ।।

जब जब मुझ पर आफत आई आँख तुम्हारी रोई थी,
मैं तो उस पल निश्चिंत होकर गोद में तेरी सोई थी,
मुझको अपनी पीठ बिठाकर ''घोड़ा तुम बन कर आये''-२,
गिरने लगी तो झट से आकर हाथ तुम्ही ने फैलाये ।। २ ।।

जहाँ पे मेरा बचपन बीता भूल चली उस आंगन को,
छोड़ दिया है दामन तेरा थाम लिया है साजन को,
बचपन से जो तुमने दिये वो ''संस्कार नहीं छोडुगीं''-२,
''हर्ष'' तेरा ना मान घटेगा वादा ये ना तोडुंगी ।। ३ ।।

पारिवारिक आयोजन

(बेटी के विवाह की अरदास)

तर्ज : मेरे नैना सावन भादो...

बेटी हो गई आज सयानी, पीले करो माँ हाथ-२ ।। टेर ।।

हाल बुरा माँ है, तुमसे छुपा क्या है,
मुश्किल से परिवार चलाऊँ, कैसे इसे परणाऊँ,
सोचुँ तो घबराऊँ,
बेबस और लाचर बड़ा हुँ, जाने तू हालात ।। १ ।।

ताने सहे ना जाये, किससे कहुँ मैं हाय,
तेरे सिवा मेरा कौन बता दे, अपनी दया दिखा दे,
माँ का फर्ज निभा दे,
अपने बालक को जग जननि, दे दे ये सौगात ।। २ ।।

बदल गई दुनिया, बोझ बनी बिटिया,
लोभी हो गया आज का मानव, देख करे है ताण्डव,
आज दहेज का दानव,
मुश्किल की घड़ियों में मैया, दे दो मेरा साथ ।। ३ ।।

तुझपे भरोसा है, तेरा सहारा है,
''हर्ष'' तू जाने सब मजबूरी, तेरा साथ जरुरी,
कर दे आशा पूरी,
तेरे होते जग में भवानी, कैसे रहुँ मैं अनाथ ।। ४ ।।

पारिवारिक आयोजन

(वैवाहिक सालगिरह)

तर्ज : दूल्हे का सेहरा सुहाना...

पच्चीस बरसों का ये सफर सुहाना है,
सालगिरह का उत्सव आज मनाना है,
एक जनम की बात नहीं अब जनमों कर,
इक दूजे का हमको साथ निभाना है ।। टेर ।।

प्यार से तकरार से जीवन चलाया है,
सुख दुख में इक दूसरे का साथ पाया है,
खट्टे मीठे ना जाने कितने ही पल आये,
उन लमहों को हमने हँस कर गले लगाया है,
इक दूजे पर हमको प्यार लुटाना है ।। १ ।।

सौंप दी अब डोर तेरे हाथ में भगवन,
छोड़ ना देना प्रभु हम दोनों का दामन,
आज के दिन आपका किर्तन कराया है,
कर रहे गुणगान सारे हो रहा वंदन,
श्याम प्रभु के चरणों में बिछ जाना है ।। २ ।।

आज ही स्वीकार करलो न्योता ओ कान्हा,
स्वर्ण जयन्ति के मौके पर तुमको है आना,
''हर्ष'' कहे हम सबको इतना वादा तुम दे दो,
कुछ भी भूलो अपना वादा भूल ना जाना,
हम बच्चों से वादा श्याम निभाना है ।। ३ ।।

पारिवारिक आयोजन

(बेटी की विदाई)

तर्ज : सुन साँवरे तेरे ही भरोसे...

मेरी लाडली चली रे चली रे मोहे छोड़ के,
बचपन की भूली बिसरी यादों को छोड़ के ।। टेर ।।

कैसे भुलाऊँ तेरी बचपन की यादें,
तुतली जुबान से वो प्यारी प्यारी बातें,
आके लिपटना तेरा मुझसे वो दौड़ के ।।
मेरी लाडली चली रे...।। १ ।।

मैया करेगी किससे दिल की वो बतियां,
याद में जगेगा भैया सारी सारी रतियां,
सखियाँ रहेगी कैसे तुझसे नाता तोड़ के ।।
मेरी लाडली चली रे...।। २ ।।

बेटी पराया धन है ''हर्ष'' इतना जानता,
लेकिन जुदाई को ये दिल नहीं मानता,
साजन के घर को लाडो रखना तू जोड़ के ।।
मेरी लाडली चली रे...।। ३ ।।

पारिवारिक आयोजन

(बेटे की बारात)

तर्ज : आज मेरे यार की शादी है...

लाडलो ब्यावण चाल्या जी -२,
बेटे तांई आज बीन्दणी ल्यावण चाल्या जी ।। टेर ।।

अनोखो बेटो जायो, कुँवर ने खूब पढ़ायो,
खर्च कीन्हो है भारी, आई व्यावण की बारी,
बीन्द बणा बेटे ने तोरण मारण चाल्या जी ।। १ ।।

खुशी की घड़ियाँ आई, पागडी शीश बंधाई,
ब्याव को चाव लाग र्‌यो, बण्यो है बीन्द लाडलो,
सज्जन गोठ समधी के घर में खावण चाल्याजी ।। २ ।।

सूट पहर्‌यो है भारी, लुगायाँ निरखे सारी,
गले में बान्धी टाई, बण्यो है आज जवाँई,
समधाणे के आगे बैण्ड बजावण चाल्या जी ।। ३ ।।

बापु दिल को बड़ो है, कर्‌यो खर्चो घणो है,
खोल दी थेली भाई, लो बांटे आज बधाई,
भैण बेटियों ने इब नेग चुकावण चाल्या जी ।। ४ ।।

बधाई दे द्‌यो भैया, हमें बस सवा रुपया,
प्रभु के भजन सुनायें, भतीजा ब्यावण आये,
''हर्ष'' कहे समधाणें आगे नाचण चाल्या जी ।। ५ ।।

पारिवारिक आयोजन

(वैवाहिक रजत जयन्ति)

तर्ज : कन्हैया ले चल परली पार...

सम्हालो हमको दया निधान,
रजत जयन्ति का शुभ अवसर आन पधारो श्याम ।।

सुन्दर सपन दिखाये तुमने,
पग-पग दीप जलाये हमने,
पच्चीस बसन्त बिताये हमने,
दम्पत्ति का वैवाहिक जीवन आन सँवारो श्याम ।। १ ।।

जबसे तेरी शरण में आये,
जीवन की हर खुशियाँ पाये,
रखना अपनी दया बनाये,
अनजाने की भूल चूक को आन सुधारो श्याम ।। २ ।।

आशिष का गुलदस्ता लाकर,
भेंट करो तुम हे करुणाकर,
सर पे अपना हाथ फिरा कर,
''हर्ष'' कहे अपने बच्चों को आन निहारो श्याम।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : किस्मत वालों को ...

अमृत बरसे रे, सोणा सा श्याम तेरा श्रृंगार,
बाबा बैकुण्ठ सा लागे, तेरा दरबार ।। टेर ।।

स्वर्ग सरीखा श्याम नजारा है,
धरती पे चन्दा को उतारा है,
बजने लगी है लाखों शहनाई,
दूल्हे सा तुझे आज संवारा है,
पल भर ना हटती मुख से, पलकें सरकार ।। १ ।।

कलियों को गुच्छों में समेटा है,
गजरों से तुझे आज लपेटा है,
स्वर्ग लोक का एक फरिश्ता ज्युँ,
सजधज कर आसन पे बैठा है,
मन भावन झांकी तेरी, निरखे संसार ।। २ ।।

''हर्ष'' कहे तूने दिल लूटा है,
सच तो ये है बाकी झूठा है,
चातक जैसे स्वाति पा जाये,
सूखे में युँ झरना फूटा है,
प्यासी आँखों ने पाई, मानो जलधार ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

राग रचयिता : अनिल रजनीश शर्मा

आजा रे साँवरिया – आजा रे साँवरिया,
दर्शन के प्यासे ये नैना मोहन तुझे पुकारे,
विरहा सहा ना जाये, ले लो रे खबरिया ।। टेर ।।

पथराई अंखियो में, अंसुओं की धार है,
रस्ता निहारुं कान्हा, तेरा इंतजार है,
दूरी सही ना जाये, हुई मैं बावरिया ।। १ ।।

रो - रो गुजारे दिन, मैंने तेरे प्यार में,
छोड़ गये श्याम क्युँ, मुझे मझधार में,
करुँ क्या बता हाय, पूछे ये गुजरिया ।। २ ।।

दिन तो गुजर जाता, रात नहीं ढलती,
पल पल हर पल, याद तेरी पलती,
हसँती है मोपे हाय, सारी ये नगरिया ।। ३ ।।

तोड़ना था जो तुझे, दिल क्युँ लगाया था,
''हर्ष'' बतादे क्युँ, अपना बनाया था,
छलक उठी है हाय, आँखों की गगरिया ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : काहे करता तु इतना गुमान बावरे...

आजा देखले तू रोये तेरा प्यार साँवरे,
तेरी यादों में है दिल बेकरार साँवरे,
मेरे आँसुओं का थोड़ा तू खयाल कर -२,
तेरे चरणों को धोये बार-बार साँवरे ।। टेर ।।

मेरी तनहाई तुझको ''पुकारती''-२,
सूनी आँखें तेरा रस्ता ''निहारती''-२,
मेरे अरमानो को ना युँ हलाल कर -२,
कही टूट ही ना जाये ऐतबार साँवरे ।। १ ।।

जिस पल तू दरश ''दिखलायेगा''-२,
रोते दिल को सुकुन ''आ जायेगा''-२,
उस पल को मैं रखुंगा सम्भाल कर -२,
उन लमहों का है इंतजार साँवरे ।। २ ।।

मेरी आप बीती शब्दों में ''बयान है'' -२,
अब तू ही मेरे जीने का ''सामान है'' -२,
कैसे ''हर्ष'' दिखाऊँ मैं निकाल कर -२,
दिल बिरहा में हुआ तार तार साँवरे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(झूला)

तर्ज : टूटे बाजुबन्द री लूम...

आयो तीज्यां रो त्योहार, रिमझिम-रिमझिम पड़े फुहार,
कोई झूलो झूलण आयो म्हारो साँवरियो सरकार,
लाड लडाओ रे साथिड़ा, डोर हिलाओ रे साथिड़ा,
आयो सावणियो ...।। टेर ।।

थारो खूब सज्यो सिणगार, ज्याँमें गजरां की भरमार,
थारा भक्त करे मनवार, झूलो खाटू का सरदार,
थारो रूप सलूणो कान्हुड़ा म्हे निरखां बारम्बार,
लाड लडाओ रे...।। १ ।।

आई सावणिये री तीज, मनड़ो थारो जासी रीझ,
बरसे झर झर इन्दर देव, तन मन थारो जासी भीज,
छाई हरियाली तीज्यां में देखो झूले री बहार,
लाड लडाओ रे... ।। २ ।।

थे तो झूले का शोकीन, बेगा हो जाओ आसीन,
थारो ''हर्ष'' साँवरा सेठ, थारी सेवा में तल्लीन,
सगला चरणां धोक लगाओ आयो जग को पालनहार,
लाड लडाओ रे... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : जिस पथ पे चला...

उल्फत में तेरी, चाहत में तेरी,
मुझे आज खो जाने दे,
पी लूं मैं तेरा, ये जाम मुझे,
मदहोश हो जाने दे ।। टेर ।।

राजा को मेरे साँवरिया, ''सेवक की जरुरत होती''-२,
राज बिल्कुल चले ना अकेले, ''प्रजा की जरुरत होती-२,
तू है राजा मेरा-२, मुझे प्रजा तेरी, मेरे श्याम हो जाने दे ।। १ ।।

मैं राही मेरी मंजिल तू, ''बस साथ निभाते रहना''-२,
लड़खड़ाऊँ अगर राहों में, ''जरा हाथ बढ़ाते रहना''-२,
हो जाये जो अब-२, कुछ परवाह नहीं, वो आज हो जाने दे ।। २ ।।

थक जाऊँ जो चलते चलते, ''बाँहो का सहारा देना''-२,
फँस जाये भँवर में नैया, ''तू आके किनारा देना''-२,
''हर्ष'' रज ये तेरी-२, चरणों की मुझे, माथे पे लगाने दे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

स्वरबद्ध : प्रवीन बेदी

उसकी नैया पार हुई जो, आया शरण तिहारे,
ओ पालन हारे-२ ।। टेर ।।

जिस जिसने विश्वास जताया, ''पल में दौड़ा आया''-२, बाबा,
प्रबल प्रेम के पाले पड़कर, ''अपना आप भुलाया''-२, इसने,
चिंता फिकर उसे फिर कैसी, जो है तेरे सहारे ।।
ओ पालन हारे...।। १ ।।

ईश्वर अल्लाह ईशु तूही, ''साँचो नाम तिहारो''-२, बाबा,
रब कह दो या खुदा बुलाओ, ''या घनश्याम पुकारो''-२, इसको,
अपनी अपनी श्रद्धा लेकर, आये तेरे द्वारे ।।
ओ पालन हारे...।। २ ।।

छोटा बनके शरण जो आया, ''उसने तुझको पाया''-२, बाबा,
पापी से पापी प्राणी को, ''तुमने पार लगाया''-२, बाबा,
जिसने सौंपी बाजी तुमको, वो तो कभी ना हारे ।।
ओ पालन हारे...।। ३ ।।

कण कण में है बास तुम्हारा, ''घट घट में है डेरा''-२, बाबा,
अन्तर्मन में जिसने झांका, ''पाया तेरा बसेरा''-२ बाबा,
''हर्ष'' हुए ह्रदय में उसके, रोशन चान्द सितारे ।।
ओ पालन हारे...।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(झूला)

तर्ज : सावन का महिना...

एक अकेले कान्हा और गोपी कई हजार,
राधा के बिन सूना है ये झूलों का त्योहार ।। टेर ।।

होठों पे बंशी सोहे, समां है सुहाना,
शोकीन मुरली वाला, झूले का पुराना,
राधा क्युं नहीं आई, ये सोच रहे सरकार ।। १ ।।

जोर से सखी ने ज्युँही, झोटा दिया है,
सम्भल ना पाया कान्हा, बेकाबू हुआ है,
छूट गई हाथों से, लो मुरली मदन मुरार ।। २ ।।

झूले से उतरे छलिया, सखियाँ ना चाहे,
बंशी बिना साँवरिया, रह नहीं पाये,
मुरली तड़प के पूछे, क्युँ छोड़ा पालनहार ।। ३ ।।

इतने में राधे रानी, दौड़ी दौड़ी आई,
देख दशा मोहन की, वो मुस्कुराई,
उठा के बंशी दे दी, लो पकड़ो सिरजन हार ।। ४ ।।

कहने लगे साँवरिया, सुन प्राण प्यारी,
तेरे बिना तो कुछ ना, हस्ति हमारी,
''हर्ष'' कहे श्री राधे, गिरधर का है आधार,
राधा के संग कान्हा झूले, रिमझिम पड़े फुहार ।। ५ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : ऐ जाने वफा ये जुल्म ना कर...

ऐ श्याम मेरे, ये जुल्म ना कर,
औरों पे करम, सेवक पे सितम,
तोड़ो ना प्रभु, भगतों का भरम,
औरों पे करम, सेवक पे सितम ।। टेर ।।

मैं दास पुराना हूँ तेरा, युँ मुझको रुलाना ठीक नहीं,
दुखड़ों का सताया हूँ बाबा, ''युँ आखें चुराना ठीक नहीं ''-२
मुझपे भी तो हो, थोड़ी सी रहम ।। १ ।।

औरों को दिया तूने इतना, बदहाल बता मैं कैसे रहुँ,
जिस हाल में जीता हूँ दाता, ''वो हाल तुझे मैं कैसे कहुँ''-२
दुनिया ने दिये, कितने ही जखम ।। २ ।।

ये बात समझ ले बिन तेरे, दुनिया में कौन हमारा है,
ये ''हर्ष'' कहे इक तेरे सिवा, ''दीनों को कौन सहारा है''-२
बिन तेरे हमारी, हस्ति खतम ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : पिया ऐसो जिया में समाय गयो रे...

कान्हो ऐसी मुरलिया बजाय गयो री,
कि मैं तनमन की सुधबुध भुला बैठी,
मोपे कैसो यो जादू चलाय गयो री,
कि मैं छलिया को अपना बना बैठी ।। टेर ।।

मैं रसोई में भोजन बनाने चली,
हाय दैया शरम से मैं गड़ गई रे,
तेरी मतवारी धुन में हुई बावरी,
मैं तो तवै पे रोटी जला बैठी ।। १ ।।

ज्योंही पनघट से पनिया मैं भरके चली,
ऐसी थिरकी छलक गई गागरिया,
भीगी चोली रे भीगा ये तनमन मेरा,
लोक लज्जा मैं सारी गंवा बैठी ।। २ ।।

रात पूनम की थी वो बांसुरिया बजी,
''हर्ष'' नैनों से निन्दिया उड़न छू हुई,
मेरे पैरों में पायल मचलने लगी,
ता ता थैया मैं खुद को नचा बैठी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : पुरवा सुहानी आई रे...

किरपा दयालु कर दे, किरपा,
मैं तो आया तेरे द्वार, दानी करदे तू उद्धार,
मुझपे करम कर दे, किरपा ।। टेर ।।

दे दे चरणों में श्याम ठिकाना,
अपने भगत की आस पुरा ना,
नाता हर तोड़ा है, तेरे संग जोड़ा है,
दीन पे रहम करदे, किरपा ।। १ ।।

पल पल फेरुं मैं नाम की माला,
नाम सुमिर के मैं लेऊँ निवाला,
मेरा यही सपना है, तेरा मुझे बनना है,
दास पे महर करदे, किरपा ।। २ ।।

तेरी मस्ती का जाम पिला दे,
अपने चरणों का दास बना दे,
तेरा बन जाऊँगा, तेरे गुण गाऊँगा,
''हर्ष'' जरा तु कर दे, किरपा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : क्या जानुं मैं सजनियां चमकेगी कब...

किरपा की ओ साँवरिया, बरसा दे रे बदरिया, घर में गरीब के,
पिलाइदे प्यार की -३, घूंट साँवरे ।। टेर ।।

गर जो मेरे पास होती दौलत, फिर ना होती मांगने की नौबत,
बनता नहीं दुनियां में खिलौना, पड़ता नहीं जीवन में रोना,
बाबा जहाँ में इज्जत, यहाँ काम से ना होती, होती है दाम से,
भर दे रे झोलियाँ, आज साँवरे ।। १ ।।

चाल तेज चल रहा जमाना, पीछे तेरा रह गया दिवाना,
धीरे-धीरे चल रही है गाड़ी, पास नहीं मेरे बंगला बाड़ी,
तकदीर का हूँ मारा, दे दे जरा सहारा, मुझको भी देख ले,
कलइयां थाम ले, आज साँवरे ।। २ ।।

नाथ तेरा साथ जो मैं पाऊँ, ''हर्ष'' फिर अनाथ ना कहाऊँ,
थक गया हूँ ठोकरें मैं खाके, पड़ गया हूँ चरणों में मैं आके,
मैं हर कदम पे हारा, छोडुं ना तेरा द्वारा, जिद है गरीब की,
मिटाइदे दूरियाँ, आज साँवरे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : दिल की ये आरजू थी...

किस्मत से हमको आज मेरा साँवरा मिला,
हम हैं खुशनसीब हमें दर तेरा मिला,
जीवन में अब तो श्याम मेरे ना कोई गिला,
अच्छे करम का आपने हमको दिया सिला ।। टेर ।।

सेवा में अपनी श्याम ने हमको लगा लिया,
बदले में हमको क्या कहें क्या-क्या नहीं दिया,
तोहफे का कोई मोल न जो आपसे मिला ।। १ ।।

हमने हवाले आपके जीवन ये कर दिया,
पन्नों पे दिल के श्याम तेरा नाम लिख लिया,
हृदय का फूल श्याम तेरे दर पे है खिला ।। २ ।।

शब्दों में कर सकुं ना बयां आपके करम,
हाथों से तुमने भर दिये मेरे सभी जखम,
कैसे करूँ मैं आपका अब शुक्रिया भला ।। ३ ।।

परिवार की ये डोर मेरी तूने जो थाम ली,
महिमा दयालु आपकी मैंने भी जान ली,
कितनों को वो मिला है जो इस ''हर्ष'' को मिला ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : गोरे रंग पे ना इतना गुमान कर...

कुछ पाना हो तो खाटू आ,
जो चाहेगा वो मिल जायेगा,
क्या खड़ा तू सोचे दीवाने,
तकदीर का ताला खुल जायेगा ।। टेर ।।

मेरे साँवरे के जैसा, दूजा यहाँ दिलदार नहीं कोई,
देखे हजारों दाता, ऐसा यहाँ दातार नहीं कोई,
तू श्याम चरण में झुक जा रे-२
मुरझाया उपवन खिल जायेगा ।। १ ।।

करुणा का सिन्धु है ये, करुणा जरा आके भगत पा ले,
महिमा अनोखी इनकी, दातार की महिमा जरा गा ले,
तू सौंप तेरा यह लोक इसे-२
तेरा परलोक सुधर जायेगा ।। २ ।।

दानी दयालु ऐसा, जो मांग ले उसको वही देता,
अपने भगत की कश्ति, पतवार ये बनके सदा खेता,
तू ''हर्ष'' इसे आवाज लगा-२
ये तेरा मांझी बन जायेगा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : म्हारी चन्द्र गवरजा...

कुण घाल्यो रे कान्हा, आख्याँ में सुरमो थारे सोवणो ।।

तीखे तीखे नैणां मांही, सुरमो झीणो झीणो,
नैण सुं नैण मिलाऊँ तो मेरो मुश्किल हो गयो जीणो जी ।।
कुण घाल्यो रे कान्हा ...।। १ ।।

कान्हुड़ा गिरधारी थारी, आख्याँ मोटी-मोटी,
अइयाँ की मटकावो थे भगतां पर फेंको गोटी जी ।।
कुण घाल्यो रे कान्हा ...।। २ ।।

मतवारी आख्याँ में सुरमो, सोने पर सुहागो,
कजरारे नैणां को जादू भगताँ उपर छाग्यो जी ।।
कुण घाल्यो रे कान्हा ...।। ३ ।।

हे बड़भागण सुरमा दानी, कैसो पुण्य कमायो,
''हर्ष'' साँवरो तेरो सुरमो आख्याँ माहीं घलायो जी ।।
कुण घाल्यो रे कान्हा ...।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : क्या मिलिये ऐसे लोगों से...

कैसे खाटू जाये वो जो, हालत से लाचार है,
हाथ पकड़ कर ले चल उसको, तेरा बेड़ा पार है ।। टेर ।।

बड़ी तमन्ना दर्शन की पर, तंगी ने मजबूर किया,
जरा सोच तू एक दिवाना, बाबा से क्युँ दूर हुआ,
जाये कैसे जिसका पलता, मुश्किल से परिवार है ।।
हाथ पकड़ कर...।। १ ।।

मीलों दूर खड़े पंक्ति में, कैसे दर्शन पायेगें,
बच्चे-बूढ़े, रोगी–नारी, तो बेबस हो जायेगें,
एक झलक पाने की खातिर, आँखों को इंतजार है ।।
हाथ पकड़ कर...।। २ ।।

मेले में कितनों को प्यारे, कमरा कहीं नहीं मिलता,
अगर जगह हो करो मुहैया, बंदे तेरा क्या घटता,
''हर्ष'' कहे फिर तेरी पूजा, बाबा को स्वीकार है ।।
हाथ पकड़ कर...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : छोड़ गये बालम...

कौन सुनेगा रे, मेरी तुम बिन बाबा कौन सुने,
कौन गिनेगा रे, मेरे तुम बिन दुखड़े कौन गिने ।। टेर ।।

अरज लगाई कहाँ कहाँ पे, आखिर तुझे पुकारा,
दुनिया से इन्कार मिला है, ''अब तो तेरा सहारा''-२
कैसे बनेगा रे, मेरा बिगड़ा नसीबा कैसे बने ।। १ ।।

रो रो कर फरियाद करूँ मैं, सुनले लखदातारी,
अपना जान के तुझको बाबा, ''मैंने अरज गुजारी''-२
कैसे बसेगा रे, मेरा उजड़ा गुलशन कैसे बसे ।। २ ।।

इस दुनिया में आप कुहावो, हारे के रखवारे,
हारा हुआ शरण में आया, ''जाये किसके द्वारे''-२
कैसे मिटेगा रे, मेरा दुखड़ा बाबा कैसे मिटे ।। ३ ।।

तूने भी इन्कार किया तो, किसको मुंह दिखलाऊँ,
''हर्ष'' पड़ा चरणों में तेरे, ''अब ना लौट के जाऊँ''-२
कौन कहेगा रे, मुझे अपना तुम बिन कौन कहे ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : दो दिल टूटे ...

खाटू वाले पार लगा रे,
टूटी नैया पड़ी मझधारे ।। टेर ।।

गहरा भंवर है बाबा, हाथों से छूटी पतवार रे,
आके सम्भालो दाता, मुझको है तेरी दरकार रे,
भटकों को तू ही, देता किनारे ।।
खाटू वाले पार... ।। १ ।।

कौशिश मैं करके हारा, तूफां का कर ना पाऊँ सामना,
धारा में बहता जाऊँ, आके दयालु बाहें थामना,
करुणा के सिन्धु, करुणा दिखा रे ।।
खाटू वाले पार... ।। २ ।।

मुझको भरोसा तेरा, तुझपे है पूरा विश्वास रे,
आओगे लीले चढ़के, ''हर्ष'' ना छोड़ी मैंने आस रे,
डूब ना जाऊँ, आके बचा रे ।।
खाटू वाले पार... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : चान्दी जैसा रंग है तेरा...

गम का मारा एक बेचारा होके आज निराश,
आया तेरे पास साँवरिया आया तेरे पास ।। टेर ।।

संग चले जो साथी मेरे, उनका साथ है छूटा,
शरण तुम्हारी आया हूँ मैं, लेकर दिल ये टूटा,
तेरे जैसा दूजा ना है, तू है देव अनूठा,
काम बनाया दुनिया का अब सुन मेरी अरदास ।।
आया तेरे पास... ।। १ ।।

दया जरा हो जाये मुझपे, देखले हालत मेरी,
मैंने तेरे हाथ में सौंपी, अपनी जीवन डोरी,
लीले वाले आज दिखादे, अब तू लीला तेरी,
देख दयालु टूट ना जाये मेरे दिल की आस ।।
गम का मारा... ।। २ ।।

हारे के साथी कहलाते, तुम तो खाटू वाले,
''हर्ष'' कहे बन जाओ बाबा, मेरे भी रखवाले,
इस निर्बल के पोछं के आंसू, अपने गले लगाले,
तेरे होते क्युं है तेरा बेटा आज उदास ।।
गम का मारा... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : चला भी आ - आजा रसिया...

चला भी आ - आजा साँवरे,
तेरे होते बाबा मेरी लाज क्युँ जाये,
रो रो के दिवाना तुझे आज बुलाये ।। टेर ।।

इतना बतादे क्युँ तू खफा है,
नादान हूँ मैं कह दे जो भी खता है,
मुझको तू दे दे जितनी सजा है,
रुसवाई तेरी पर मैं सहने ना पाऊँ रे, तुझको पता है,
चला भी आ - आजा साँवरे,
प्रेमी को दयालु ऐसे क्युँ तड़पाये ।। १ ।।

पथरा गई है अँखिया ये मेरी,
कबसे बिछी है बाबा राहों में तेरी,
मुझसे भला युँ निगाहें क्युं फेरी,
आने में तुझको अब मुझको बता दे रे, कैसी है देरी,
चला भी आ - आजा साँवरे,
बैठा हूँ साँवरिये तेरी आस लगाये ।। २ ।।

अपने भगत से काहे ये दूरी,
मैं भी तो चाहुं बाबा तेरी हुजुरी,
मुझको है तेरा दर्शन जरुरी,
''हर्ष'' दिवाना तेरी यादों में तड़पे रे, कर आस पूरी,
चला भी आ- आजा साँवरे,
विरहा में कहीं मेरी जान न जाये ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : उनसे मिली नजर कि मेरे ...

छलिये तेरी नजर ने मुझे, आज छल लिया,
तूने ओ जादूगर -३, क्युं मुझे, आज छल लिया ।। टेर ।।

जब से शरण आया, मैं सरकार,
मुझको भा गया, ये दरबार,
देख के तेरी चितवन को, काबू रहा ना मैं दिलदार,
खुद की नहीं खबर-३, क्युं मुझे, आज छल लिया ।। १ ।।

दिल तेरे दर पे, खो गया है,
छलिये तुम्हारा अब, हो गया है,
मुझको दिवाने सारे कहने लगे, तूही बतादे क्या हो गया है,
कैसा तेरा हुनर-३, क्युं मुझे, आज छल लिया ।। २ ।।

छल से तुम्हारे था, मैं अनजान,
जाल में फँस गया, ये नादान,
देख के अनुपम झाँकी को, ''हर्ष'' रह गया मैं हैरान,
वश में नहीं जिगर-३ क्युं मुझे, आज छल लिया ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : लाँग ग्वाचा....

जद जद चानण ग्यारस आवे,
खाटू में मेलो भर जावे,
बैठ्यो बैठ्यो माल लुटावे रे,
म्हारो श्याम रंगीलो ।। टेर ।।

मकराणे को भवन निरालो,
सजधज बैठ्यो खाटू वालो,
मंद मंद मुस्कावे रे ।। १ ।।

श्याम रंगीलो म्हारो लखदातारी,
अरज लगावे दुनिया सारी,
सैं की आस पुरावे रे ।। २ ।।

ग्यारस की देखी सकलाई,
बिन बोल्यां होवे सुणवाई,
साँचो परचो दिखावे रे ।। ३ ।।

''हर्ष'' धणी के मन जो भावे,
ग्यारस ने ऊँको चैक बणावे,
बारस मोहर लगावे रे ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : अगर दिलबर की रुसवाई...

जरा सा पाने की जिद में बहुत कुछ, छूट जाता है,
जरा सी भूल से बंदे भरोसा, टूट जाता है ।। टेर ।।

यहाँ कई साल लग जाते, भरोसा तब कहीं बनता,
तु कच्चे धागों से सबका, ''अरे विश्वास ही बुनता''-२
जरा सी ठेस लग जाये वो धागा, टूट जाता है।। १ ।।

बड़ा विश्वास बंधु का, गुरु पे नाज चेले का,
बहन का भाई से बन्धन, ''भरोसा बाप बेटे का''-२
जरा सा भी चटक जाये तो साया, छूट जाता है ।। २ ।।

जो हासिल हो गया प्यारे, खुशी उसकी नहीं मन में,
सुहाने ढ़ोल लगते हैं, ''सभी को दूर के जग में''-२
जरा सा ज्यादा जल डालो तो पौधा, सूख जाता है ।। ३ ।।

बड़े ही शांत चित का हो, बड़ा ही धैर्यधारी हो,
''हर्ष'' उसको ना उकसाओ, ''भले ही आज्ञाकारी हो''-२
सब्र का बांध पल भर में उसी का, टूट जाता है ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : किसी राह में किसी मोड़ पर...

जो शमां में तेरी जल गया
ना जाने क्या उसे मिल गया
ये उसे पता या तुझे पता ।। टेर ।।

तेरी आरजू तेरी जुस्तजू,
उसे चाहिये बस तू ही तू,
तेरे प्यार में वो तो लुट गया,
उसे लुटके जाने क्या मिला ।। १ ।।

उसे मिल गया तेरा पता,
रहा खुद का कुछ भी ना पता,
भावों के दरिया में बह गया,
उसे डूबने से क्या मिला ।। २ ।।

ये जहाँ कहे उसे बावरा,
उसको तो तेरा ही आसरा,
फिर खुद की हस्ती मिट गई,
उसे मिट के जाने क्या मिला ।। ३ ।।

कोई नरसी बनके देख ले,
उस ब्रह्म को बस जान ले,
फिर ''हर्ष'' खुद से पूछ ले,
क्या खो दिया और क्या मिला ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : जो बोयेगा वही पायेगा...

जो चाहेगा, वही पायेगा, दामन तेरा, भर जायेगा,
पल भर में ये, दुखड़े हरे,
खाटू आओ, खुशियाँ पाओ ।। टेर ।।

सबसे निराला मेरे, श्याम धणी का द्वारा,
हारे हुए को देता, मेरा श्याम सहारा,
हारा हुआ, जो जायेगा, साथी तेरा, बन जायेगा,
पल भर में ये ...।। १ ।।

इस धरती पर दूजा, देव न इसके जैसा,
शरणागत का करता, काम ये कैसा कैसा,
आसुँ इसे, दिखलायेगा, काम तेरा, बन जायेगा,
पल भर में ये ... ।। २ ।।

खुद जाकर आजमा ले, और कहुँ क्या ज्यादा,
किस्मत वालों को ही, मिलता है मेरा बाबा,
चरणों में जो, झुक जायेगा, ''हर्ष'' उसे, अपनायेगा,
पल भर में ये ... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(झूला)

तर्ज : गाड़ी वाले मुझे बिठा ले...

झूला झूलन आन पधारो लीले के असवार,
साँवरे स्वागत है,
पलक बिछाये बैठे सारे, आ जाओ सरकार,
साँवरे स्वागत है ।। टेर ।।

गणपत - हनुमत - शंकर जी, झूला झूलन आये हैं,
गोप गोपियों संग कान्हा, राधे जी को लाये हैं,
बाट निहारें हम सब तेरी, बाबा लखदातार ।।
साँवरे स्वागत है... ।। १ ।।

सावन की ये हरियाली, तीज सुहानी आई है,
गाँव गाँव और गली गली, झूलन की रुत आई है,
हमने बाबा खूब सजाया, ये तेरा श्रृंगार ।।
साँवरे स्वागत है... ।। २ ।।

मोर मोरनी नाच रहे, ''हर्ष'' नजारा है न्यारा,
ऐसा ये दरबार सजा, मानो मधुबन है प्यारा,
भक्त तेरे दर्शन को तरसे, दे दो अब दीदार ।।
साँवरे स्वागत है... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : रंग मत डारे रे सांवरिया..

झण्डो नाचे रे साँवरिया थारो फागणिये के माय,
बाबा थारा सेवकियाँ के हाथां में लहराय ।। टेर ।।

श्याम निशान, उठा हाथां में,
बडा बडेरा बच्चा जावे खाटू जी के माय ।।
झण्डो नाचे रे... ।। १ ।।

झाझं मजीरा बाजे, चंग सुरीला,
नाच कूदता जासी थारे मंदरिये के माय ।।
झण्डो नाचे रे... ।। २ ।।

मेलो भरयो है थारो, रंग रंगीलो,
रंग बिरंगी ध्वजा ले चाले हाथा में उठाय।।
झण्डो नाचे रे... ।। ३ ।।

कमर में फेटो, हाथां में डोरी,
''हर्ष'' साँवरा मीठा मीठा भजन सुणाय ।।
झण्डो नाचे रे... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मेरा प्यार भी तु है ये बहार...

तेरा नाम पुकारा, दे दे श्याम सहारा,
गम की लहरों में डूबा ही जाऊँ,
मोहे बचाले रे, बचाले रे ।। टेर ।।

आजा अब तो तारण हारे, भव बंधन से पार लगा दे,
करुणानिधि हे खाटू वाले, नाम की अपने लाज बचाले,
जीवन तेरे हवाले ।। १ ।।

हम प्राणी हैं पाप के पुतले, पाप किया है पाप करेगें,
पातक हर है नाम तुम्हारा, दीनों के दुखड़े हरने पड़ेगें,
चरणों में अरज धरेगें ।। २ ।।

छूट चुके हैं सारे सहारे, एक सहारा श्याम तुम्हारा,
संकट की घड़ियों में बाबा, आके पकड़ले हाथ हमारा,
रस्ता मैं देखुं तिहारा ।। ३ ।।

गिद्ध गणिका अजमिल जैसी, किरपा हमपे भी बरसाओ,
''हर्ष'' हमारा नाम उन्हीं में, लिख लो दयालु जल्दी से आओ,
करुणा जरा दिखाओ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : अहसान मेरे दिल पे...

तेरी बंदगी ने साँवरे ऐसा असर किया,
जो कर सकी दवा न वो दुआ ने कर दिया ।। टेर ।।

लेकर सहारा हाथों का जो दूर तक चले,
उनको तो बीच राह में साथी नये मिले,
नीयत को उनकी श्याम ने सरे आम कर दिया ।। १ ।।

जब प्रेमियों ने घात किया फासले हुए,
मुश्किल में आके साँवरे ने होंसले दिये,
जीवन की राह को बड़ा आसान कर दिया ।। २ ।।

नामो निशान मिट गये दिल की दीवार पर,
शीशा वो तोड़ डाला है हमने उतार कर,
मतलब के साथियों से मुझे मुक्त कर दिया ।। ३ ।।

जो वक्त से डरते नहीं वो कुंद हो गये,
रोशन हुए थे जो कभी वो धुंध हो गये,
दुनिया ने ''हर्ष'' उनको शर्मसार कर दिया ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मुझे इश्क है तुम्ही से...

तेरी याद श्याम आई, आँखे ये डब डबाई,
आजा दरश दिखादे, ना और अब समाई ।। टेर ।।

बेचैन हो रहा हुँ, यादों में रो रहा हुँ,
आके जरा सम्भालो, मैं होश खो रहा हूँ,
ना देर कर कन्हाई, तुझको मैं दूं दुहाई ।।
आजा दरश दिखादे...।। १ ।।

ढ़ांढ़स मुझे बंधाओ, करुणा जरा दिखाओ,
गालों पे श्याम मेरे, थपकी जरा लगाओ,
आती मुझे रुलाई, देते न क्युँ दिखाई ।।
आजा दरश दिखादे...।। २ ।।

जनमों की प्यास मेरी, दर्शन की आस तेरी,
हैं दूर रहके तुमसे, पलकें उदास मेरी,
कर ''हर्ष'' की सुनाई, सुनले मेरे कन्हाई ।।
आजा दरश दिखादे...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : तुम अगर मुझको न चाहो तो...

तुम अगर हँस के न बोलो तो कोई बात नहीं,
तुम अगर रुठ के बैठोगो तो मुश्किल होगी ।। टेर ।।

हम सफर श्याम तुम्ही ने तो बनाया है मुझे,
साथ छोड़ा ना कभी तुमने निभाया है मुझे,
ये सहारा ही बहुत है मेरे जीने के लिये,
अब अगर मैंने मसीहा जो बनाया है तुझे,
मेरी खुशियों में न आओ ''तो कोई बात नहीं''-२,
मेरे दुख में जो न आओगे तो मुश्किल होगी ।। १ ।।

अब सदा तुमको मेरा साथ तो देना होगा,
अपने हाथों में मेरा हाथ ये लेना होगा,
है तुम्हारा ही भरोसा मेरी कश्ति को तुम्हे,
अपने हाथों से मेरे साँवरे खेना होगा,
मेरे घर में ना तुम आओ ''तो कोई बात नहीं''-२,
तेरी चौखट पे नहीं जाऊँ तो मुश्किल होगी ।। २ ।।

तुम सदा प्रेम दयालु युँ सिखाते रहना,
प्यार की बांसुरी साँवरिये बजाते रहना,
है गुजारा ही तुम्हीं से तेरे इन भगतों का,
तू सदा प्रेम की गरिमा को बढ़ाते रहना,
मुझसे ना प्रीत निभाओ ''तो कोई बात नहीं''-२,
''हर्ष'' रुसवा जो रहोगे तो मुश्किल होगी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : तू जहाँ-जहाँ चलेगा...

तू जहाँ पे ले चलेगा, मैं चलूंगा साथ तेरे ।। टेर ।।

ना करुँ कोई शिकायत, ना धरुँ मैं कोई अरजी,
चाहे जो वो तू करले, मेरे श्याम तेरी मरजी,
तू जहाँ मुझे रखेगा, मैं रहूँगा साथ तेरे ।।
तू जहाँ पे ले... ।। १ ।।

ठाकुर ये मेरी कश्ति, अब आपके हवाले,
चाहे तो डूबने दे, चाहे अगर बचाले,
तू अगर जो गम भी देगा, मैं सहुँगा साथ तेरे ।।
तू जहाँ पे ले... ।। २ ।।

तेरा दर ही मेरी मंजिल, मेरा आखिरी ठिकाना,
जैसा भी हूँ मैं तेरा, मुझे साँवरे निभाना,
तू जहाँ मुझे दिखेगा, मैं दिखुँगा साथ तेरे ।।
तू जहाँ पे ले... ।। ३ ।।

मैं अगर जो गिर पडुं तो, मेरी बैयां थाम लेना,
तेरे ''हर्ष'' को दयालु, प्रेमी का नाम देना,
तू अगर जो हँस पड़ा तो, मैं हसुँगा साथ तेरे ।।
तू जहाँ पे ले... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मेरा जीवन कोरा कागज...

तेरा हूँ मैं, बस तुम्हारा, बन के मैं रहुँ,
कहना है जो-२, अब दयालु, तुमसे ही कहुँ ।। टेर ।।

तेरे नगमे गा रहे हैं, ''साँसो के ये तार''-२,
नीन्दो में भी कर रहा हूँ, ''मैं तेरा दीदार''-२,
सोते उठते-२, बस तुम्हारा, नाम मैं जपुं ।।
तेरा हूँ मैं... ।। १ ।।

गुजरेगी ये जिन्दगानी, ''दर पे तेरे श्याम''-२,
लिख लिया है मैंने बाबा, ''दिल पे तेरा नाम''-२,
सारी राहें -२, छोड़के तेरी, राह पे चलुं ।।
तेरा हूँ मैं... ।। २ ।।

हर जनम में ''हर्ष'' पाऊँ, ''मैं तुम्हारा साथ''-२,
सांवरे मुझको तू देना, ''इतनी सी सौगात'' - २,
मुझसे तू -२, रुसवा ना होना, श्याम मैं डरुं।।
तेरा हूँ मैं... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर...

तेरे भगतों से मैं प्रेम करूँ, ऐसा परिवार बना दो ना,
जहाँ मतलब का कोई काम न हो, ऐसा संसार बसा दो ना ।।

दुनिया के रिस्तेदार प्रभु, स्वारथ का नाता रखते हैं,
यहाँ किससे प्रेम बढ़ाना है, इस बात को खूब समझते हैं,
जहाँ सच्चा प्यार बरसता हो, ऐसा घर बार बसा दो ना ।। १ ।।

बस नकली शानो शौकत में, कुछ लोग यहाँ भरमाये हैं,
दुनिया की झूठी रोशनी में, अब नैन मेरे चुंधियाये हैं,
रहे चमक तेरी इन आँखों में, ऐसी चमकार दिखा दो ना ।। २ ।।

जिनको सरगम का ज्ञान नहीं, वो तेरे नगमें गाते हैं,
सुरताल का जिनको भान नहीं, वो भी संगीत बजाते हैं,
जिसे सुनकर मनवा झूम उठे, ऐसी झनकार बजा दो ना ।। ३ ।।

मैं तेरा मेरा त्याग सकुं, मुझे राग द्वेष से मुक्ति दो,
तेरा प्रेम पथिक बन जाऊँ मैं, तेरे ''हर्ष'' को इतनी शक्ति दो,
भटके को रस्ता दिखलाऊँ, ऐसा फनकार बना दो ना ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मेरे नैना सावन भादो...

तुमको मोहन लाख निहारूँ,
फिर भी रहुँ मैं प्यासा ।। टेर ।।

जादू भरी चितवन, मूरत मन भावन,
जब देखुं तुझे, भूल ना पाऊँ, झरझर नीर बहाऊं,
यादों में खो जाऊँ,
छीन लिया है चैन जिया का, मिट ना पाये पिपासा।।
फिर भी रहुँ...।। १ ।।

मनवा हर लेना, मोहित कर देना,
ओ साँवरिये युँ मुस्काना, नैनन तीर चलाना,
तेरा शौक पुराना,
पलक उठा कर देखले प्यारे, आये चैन जरा सा ।।
फिर भी रहुँ... ।। २।।

दिल को लगा बैठा, चैन गंवा बैठा,
रातों में मोहे नीन्द न आये, दिन ना मेरे कट पाये,
बिरहा सहा नहीं जाये,
''हर्ष'' शरण में ले लो ठाकुर, दे दो मुझको दिलासा ।।
फिर ना रहुँ ... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मेरे बाँके बिहारी लाल...

थारी झाँकी सजी सरकार, लगावाँ अरजी बारम्बार,
पधारो साँवरिया ।। टेर ।।

प्यारो सो थारो सिणगार सजायो,
खाटू नगरिया म्हें न्यूतो भिजायो,
अब थारी है दरकार, ओ म्हारा लीले रा असवार,
पधारो साँवरिया ।। १ ।।

आओ बाबाजी थारी ज्योत जगाई,
चरणां में थारे म्हे तो पलकां बिछाई,
आ जाओ लखदातार, उडीकां थाने पालनहार,
पधारो साँवरिया ।। २ ।।

बैठो कान्हुड़ा थारे भोग लगावाँ,
खीर खिलावाँ थाने चूरमो जिमावाँ,
रुच रुच जीमो दातार, म्हें थारी घणी करां मनवार,
पधारो साँवरिया ।। ३ ।।

भाव भरी थारी महिमा म्हें गावाँ,
''हर्ष'' दयालु थाने भजन सुणावाँ,
म्हारा खाटू रा सरदार, करां म्हें विनति सपरिवार,
पधारो साँवरिया ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : तेरे होठो के दो फूल...

थारो फागणियो रंगीलो मन भावे,
म्हाने बाबा थारी यादड़ली सतावे,
थारे मेले में खाटू ''आवाँगा'' -२ ।। टेर ।।

म्हे तो श्याम निशान उठाकर, म्हारे बाबा की जय जय गुंजास्याँ,
भगतां के सागे मिलकर, थारे नाच कूदता आस्याँ,
थारी चौखट पे सरकार, म्हे तो आस्याँ सपरिवार,
थारे शिखर निशान ''चढ़ावाँगा'' -२ ।। १ ।।

ग्यारस ने रात्युं जागां, थारी पावन ज्योत जगास्याँ,
बारस ने न्हाय धोयकर, थारे चरणां धोक लगास्याँ,
ल्यावाँ चूरमे का थाल, सागे पंचमेला की दाल,
थारे मंड में भोग ''लगावाँगा''-२ ।। २ ।।

थारे मुखड़े पे साँवरिया, म्हे तो रंग अबीर लगास्याँ,
थांसु होली खेलण तांई, थारे मंदरिये में आस्याँ,
खेलां रंग और गुलाल, करस्याँ मंदिर थारो लाल,
थाने होली म्हें श्याम ''खिलावाँगा'' -२ ।। ३ ।।

मेले की याद संजोकर, म्हें राजी खुशी घर आस्याँ,
म्हाने बेगा खाटू बुलाओ, चरणां में अरज लगास्याँ,
म्हारी अरजी पे सरकार, करियो थोड़ो थे विचार,
''हर्ष'' थारा ही गुण म्हे ''गावाँगा'' -२ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : इक परदेशी मेरा दिल ले गया...

दर्द अनोखा मैया लल्ला दे गया,
अंखिया नचाके मेरा दिल ले गया ।। टेर ।।

मटक मटक चाले चाल मतवाली,
लटक लटक सोहे लट घुंघराली,
तिरछी निगाहों का इशारा दे गया ।। १ ।।

छोटे-छोटे पांवो में छनके पायलिया,
कमर में खोंस लई छोटी सी मुरलिया,
नजरों को प्यारा सा नजारा दे गया ।। २ ।।

मोटी-मोटी अंखियों में जादू सा समाया,
घायल किया री दैया ऐसा मुस्काया,
पूछा जो पता तो वो तुम्हारा दे गया ।। ३ ।।

''हर्ष'' यशोदा तेरा लल्ला मन भावे,
हमरी उमरिया भी इसे लग जावे,
तेरा था वो आज से हमारा हो गया ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : हम तुम्हारे लिये तुम हमारे लिये...

दर तुम्हारा मिला, हर खुशी मिल गई,
अब जमाने की खुशियाँ, मिले ना मिले,
आपके प्यार की, इतनी दौलत मिली,
अब जमाने की दौलत, मिले ना मिले ।। टेर ।।

न भूल पाऊँ मैं, दुनिया ने जब सताया था,
तुम्ही ने साँवरे मुझको गले लगाया था,
भरोसा टूट गया - २, मतलबी जमाने से,
चरण में आपके मैंने ''ठिकाना पाया था''-२
अब सदा आपका, हाथ सर पे रहे,
फिर जमाने की छतरी मिले ना मिले ।। १ ।।

जिया में साँवरे, तुझको ही अब बसाया है,
तुम्हारे प्यार में मैंने जहाँ भुलाया है,
नहीं उम्मीद है-२, दुनिया के ठेकेदारों से,
चौखट पे तेरी आके ''सर झुकाया है''-२
भूल कर ना कभी तू भुलाना मुझे,
साथ जालिम जहाँ का मिले ना मिले ।। २ ।।

तुम्ही हो साँस में, तुम ही हो मेरी धड़कन में,
न और आयेगा अब कोई मेरी जीवन में,
है इतनी आरजू-२, दातार इतना कर देना,
ये मेरे प्राण भी निकले ''तो तेरे आंगन में''-२
आखिरी वक्त में सामने तू रहे,
''हर्ष'' को फिर वो लमहा मिले ना मिले ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

राग रचयिता : रजनीश शर्मा

दिवाने नाच रहे, उड़ रहा रंग गुलाल,
खाटू नगरी आज मची है, फागुन की धमाल ।। टेर ।।

बच्चे बूढ़े नर और नारी पैदल खाटू जाते हैं,
हाथों में वो रंग बिरगें श्याम निशान उठाते हैं,
श्याम प्रभु के दर पे जाके मंदिर शिखर चढ़ाते हैं-२,
रे देखो आज भरा, मेला बड़ा विशाल ।। १ ।।

कोई पेट पलनिया जाये कोई सरपट दौड़ा जाये,
कोई लेट लेट कर जाये कोई पसर-पसर के जाये,
कोई कोई चले अकेला कोई गठजोड़े से जाये-२
रे फागुन मेले की, दूजी नहीं मिसाल ।। २ ।।

देश दिशावर से खाटू में बाबा के दिवाने आये,
भाव सुमन श्री श्याम प्रभु के चरणों में चढ़ाने आये,
बारस के दिन ''हर्ष'' श्याम की सेवक ज्योत जगाने आये-२,
फिजा में गूंज रही, भजनों की सुरताल ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मैं कहीं कवि ना बन जाऊँ...

नजरें चुरा के बैठे, सरकार क्युँ बताओ,
कबसे खड़े हैं दर पे, पलकें जरा उठाओ ।। टेर ।।

रुसवाई आपकी ये, हमसे सही ना जाये,
गुजरी है दिल पे जो भी, तुमसे कही ना जाये,
खामोश ये जुबां भी, अब तो रही ना जाये,
हमसे हुई खता क्या, इतना जरा बताओ ।।
नजरें चुरा के ...।। १ ।।

बेचैन कर रही है, खामोशियां ये तेरी,
नादां हुँ माफ कर दे, बदमाशियां तू मेरी,
हमपे भी तो चढ़ादे, मदहोशियां वो तेरी,
चरणों का अब दिवाना, हमको जरा बनाओ ।।
नजरें चुरा के ...।। २ ।।

माना खता हुई है, तू माफ श्याम करना,
पागल समझ के मुझको, दिल साफ श्याम करना,
छोटा मैं तुम बड़े हो, इन्साफ श्याम करना,
ड्योढ़ी पे ''हर्ष'' आया, अपने गले लगाओ ।।
नजरें चुरा के ...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : उमराव

नन्दलाल तेरो माखन मेरो खाग्यो ऐरी माँ,
तेरो लाडलो लालो ऐरी माँ ।। टेर ।।

घर में मेरे बड़ गयो, आधी रात के माय,
छीकें उपर चढ़ गयो, ग्वाल बालिया ल्याय,
नन्दलाल मेरी मटकी फोड़ गिराग्यो ऐरी माँ ।। १ ।।

जांवती देखके एकली, रोकी तेरो लाल,
जुल्मी चिटली आंगली, गालां में दी घाल,
नन्द लाल मेरो सारो दही खिंडाग्यो ऐरी माँ ।। २ ।।

न्हाबा ताईं कुण्ड में, उतरी बृज की नार,
चोरी चुपके आ गयो, बैरी म्हारे लार,
नन्दलाल म्हारी अँगिया-चोली चुराग्यो ऐरी माँ ।। ३ ।।

रास रचाओ जोर को, पूनम शरद की रात,
''हर्ष'' एक कान्हुड़े संग, एक गूजरी साथ,
नन्दलाल तेरो लीला गजब दिखाग्यो ऐरी माँ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(नव वर्ष)

तर्ज : सावन का महिना ...

नये साल का बाबा, स्वीकार करो प्रणाम,
आशीर्वाद तुम्हारा लेने, आया खाटू धाम ।। टेर ।।

साल के पहले दिन, नमन है हमारा,
हाथ हमेशा रखना, सिर पे तुम्हारा,
आशीष दो जीवन में, हासिल हो कई मुकाम ।।
आशीर्वाद तुम्हारा ... ।। १ ।।

दर पे तुम्हारे मेरा, रहे आना जाना,
अब तक निभाया बाबा, आगे भी निभाना,
मिलता रहे सदा ही, तेरे दर्शन से आराम ।।
आशीर्वाद तुम्हारा ... ।। २ ।।

''हर्ष'' तमन्ना मेरी, आपको बताऊँ,
हर साल पहले दिन, दर्शन को आऊँ,
अरजी है ये मेरी, अब आगे तेरा काम ।।
आशीर्वाद तुम्हारा ... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : नैना मेरे रंग भरे सपने ....

नैना मेरे, बाबा तेरे, दर्शन को तरसने लगे,
आ भी जा, साँवरे, अब तो सुकुं ना मिले ।। टेर ।।

राहों में, तेरी राहों में मैं पलकें आज बिछाऊँ,
आयेगा, तू आयेगा ये सोच सोच हर्षाऊँ,
श्याम दरश हो जाये तो समझुं, सपने हुए पूरे ।।
नैना मेरे... ।। १ ।।

अंगना, मेरे अंगना मैंने चंदन चौक पुराया,
घर को, मैंने घर को तेरी खातिर खूब सजाया,
धन-धन जीवन हो जाये जो, चरण पड़े तेरे ।।
नैना मेरे... ।। २ ।।

भिलनी, तेरी भिलनी मैं जगदीश्वर बन जाऊँ,
करमा, तेरी करमा मैं बनके भोग लगाऊँ,
''हर्ष'' विदुर के जैसे होगें, भाग्य उदय मेरे ।।
नैना मेरे... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : दिल दा मामला है...

पल में कर दिया था बालक ने सर कलम,
दानी ने पूरा कर दिया माँ को दिया वचन ।। टेर ।।

माँ की आज्ञा को लेकर, रण में वो बालक आया,
शक्ति के तीन वाण वो, तरकश में भरके लाया,
हारे का साथ निभाना, माता ने वचन भराया,
लीला धारी ने पल में, ब्राह्मण का वेश बनाया,
धरती हिली थी चाल से, थर्रा गया गगन ।। १ ।।

बालक से पूछे कान्हा, रण में क्या करने आया,
तरकश में तीन वाण ले, बालक तू लड़ने आया,
हारे का साथ निभाऊँ, बालक ने ये फरमाया,
मांगोगे वो मैं दूँगा, मैं हुँ क्षत्री का जाया,
कर दूगाँ एक तीर से, सृष्टी को मैं खतम ।। २ ।।

माता का वंदन करके, बालक ने तीर चलाया,
पीपल के उसने सारे, पत्तों को बींध दिखाया,
पल में बालक के बल को, छलिये ने जान लिया था,
बालक का शीश प्रभु ने, याचक बन मांग लिया था,
बालक ने क्षत्री वंश का, पूरा किया धरम ।। ३ ।।

बाबा की महिमा भारी, कहलाये लख दातारी,
घर-घर में श्याम प्रभु को, पूजे है दुनिया सारी,
अद्‌भुत बाबा की माया, जिसने जो मांगा पाया,
हारे का साथी भगतो, कलयुग में वो कहलाया,
चरणों में ''हर्ष'' श्याम के, शत् शत् करे नमन ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : आये हो मेरी जिन्दगी में...

प्रभु मांगने से पहले, देते हो तुम हमेशा,
जब हाथ सिर पे तेरा, क्युँ कर रहुँ परेशां ।। टेर ।।

जिस ओर तुम चलाओ, उस ओर जा रहा हुँ,
बस आपका दिया ही, भगवन मैं खा रहा हुँ,
जैसा हुकम हो तेरा, वैसै ही मैं करुंगा ।। १ ।।

तेरी बंदगी का मुझपे, ऐसा असर हुआ है,
तुझपे फिदा ये मेरा, जानो जिगर हुआ है,
हृदय से श्याम बाबा, तेरी हाजिरी भरुंगा ।। २ ।।

रहमो करम से पहले, बदहाल जी रहा था,
घुट घुट के रो रहा था, आँसु मैं पी रहा था,
जैसे भी तु रखेगा, अब ''हर्ष'' मैं रहुँगा ।। ३ ।।

दोहा- चान्द तारों से पूछा नजारों से पूछा ।
आकर के जाती हुई बहारों से पूछा ।।
बातों ही बातों में पूछा और इशारों से पूछा ।
क्या तुमने देखा है कहीं मेरे श्याम सा दूजा ।।

श्री श्याम वन्दना

राग रचयिता : अनिल रजनीश शर्मा

फागुन है ये रंग रंगीला, श्याम का मेला आया,
गाँव-गाँव और गली गली में, अजब नजारा छाया,
दुल्हन जैसी आज सजी है, खाटू नगरी श्याम की,
सेठ साँवरे ने भिजवाई, चिट्ठी तेरे नाम की ।। टेर ।।

चिट्ठी का मजमून दिवाने, पढ़कर तुझको जाना है,
श्याम निशान उठा हाथों में, मंदिर शिखर चढ़ाना है,
जै जै कार गुंजाना बंदे, श्याम प्रभु के नाम की ।।
सेठ साँवरे ने... ।। १ ।।

देश दिशावर से मेले में, लाखों सेवक आते हैं,
श्याम दिवाने इक दूजे को, अपने गले लगाते हैं,
सुबह की चिन्ता किसे वहाँ पर, फिकर किसे है शाम की ।।
सेठ साँवरे ने... ।। २ ।।

जिसको जहाँ जगह मिल जाये, वहीं पे वो रुक जाते हैं,
''हर्ष'' कहे प्रसाद समझ कर, जो मिल जाये खाते हैं,
नहीं जरुरत कोठी बंगला, ना ऐशो आराम की ।।
सेठ साँवरे ने... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : आ चल के तुझे मैं लेके चलुं...

बगिया को मेरी, दे साँवरिये, चरणों की धूल जरा,
मुरझाये नहीं, महके जो सदा, मधुबन ऐ श्याम मेरा ।।

मन के उपवन में मोहन, मैं सुन्दर फूल खिलाऊँ,
भावों में पिरोकर तेरे, चरणो में भेंट चढाऊँ,
वो बाग सदा, लहलहाता रहे, जिसका तुझे फूल चढ़ा ।।
मुरझाये नहीं... ।। १ ।।

तेरी पावन रज चरणों की, कान्हा जिसको मिल जाये,
सच कहता हूँ जगदीश्वर, जीवन उसका खिल जाये,
पतझड़ उसका, कुछ कर ना सके, रहे बारहों मास हरा ।।
मुरझाये नहीं... ।। २ ।।

तेरा स्पर्श बड़ा ही कोमल, जिसने महसूस किया है,
कहे ''हर्ष'' क्या उसका कहना, उसने अमृत को पिया है,
ये छुअन तेरी, दे मुझको भी, होगा अहसान तेरा ।।
मुरझाये नहीं... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मुझे प्यार की जिन्दगी...

बता साँवरे क्युं मुझे तू रुलाये,
मेरे आँसुओं पे तरस क्युं न खाये ।। टेर ।।

हालत पे मेरी हँसे ये जमाना,
है लाचार देखो तेरा ये दिवाना,
बहुत हो चुका है, सहा अब न जाये ।।
बता साँवरे... ।। १ ।।

समझने न पाऊँ जमाने की चालें,
मैं जैसा हूँ दाता मुझे तू निभाले,
चलना मैं चाहूँ, सर को उठाये ।।
बता साँवरे... ।। २ ।।

दया करने वाले दया तो दिखाओ,
जहाँ में ना मेरा तमाशा बनाओ,
कहे ''हर्ष'' मुझसे न फेरो निगाहें ।।
बता साँवरे... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : तेरे नैना बड़े दगाबाज रे...

बड़ा प्यारा तेरा अन्दाज रे,
कल दिया तूने भूल गया आज रे ।। टेर ।।

सबसे अनोखे हो सबमें हो आला, दानी बड़े हो छलिया,
जात ना देखे ना पात ही देखे, भरते हो तुम झोलियाँ,
हर खुशी तूने भगतों के नाम कर दी,
मुश्किलें तूने सबकी तमाम कर दी,
कल दिया ....।। १ ।।

तेरी क्या माया है लेने कौन आया है, ये भी ना देखे रसिया,
दर पे जो आता है सबको निभाता है, दाता है मन बसिया,
सारी दुनिया में उनकी पहचान कर दी,
रोती आँखों में तूने मुस्कान भर दी,
कल दिया ....।। २ ।।

नजर ना आते हो सब कुछ दे जाते हो, कैसे करुँ मैं चरचे,
अपनी दया का तू हर पल दयालु, ''हर्ष'' दिखाता परचे,
जिन्दगी हमने अब तेरे नाम करदी,
तेरे चरणों में अब सरे आम कर दी,
कल दिया ....।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : बहुत देर की दरपे आँखे लगी थी...

बड़ी देर से दरपे दिवाना खड़ा है,
बता साँवरे क्युँ बहुत देर कर दी ।। टेर ।।

उमीदें हैं दिल में, हैं आँखों में आँसू,
मेरी क्युँ न सुनता, क्युँ निष्ठुर बना तू,
मसीहा बता क्युँ -३, बना तू बेदर्दी ।।
बता साँवरे... ।। १ ।।

नहीं साँवरे हूँ मैं, पहला सवाली,
तेरे होते क्युँ है, मेरी झोली खाली,
करोड़ों की तुमने -३, यहाँ झोली भरदी ।।
बता साँवरे... ।। २ ।।

तेरे हाथ में ही है, मुकददर ये मेरा,
पुकारा है हर पल, प्रभु नाम तेरा,
बनाओ बिगाड़ो-३, तुम्हारी है मरजी ।।
बता साँवरे... ।। ३ ।।

बना हूँ मैं तेरा, बनो तुम हमारे,
तेरे ''हर्ष'' ने ठाकुर, चरण में तुम्हारे,
बड़ी आस लेकर -३, लगाई है अरजी ।।
बता साँवरे... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : पीलो

बनड़ो सो बणकर कान्हो, सिंहासन बैठ्यो जी,
तो अईयाँ को कुण सिणगार करायो जी,
म्हारे मन भायो जी ।। टेर ।।

घेर घुमेरो बागो, तन थारे सोवे जी,
तो अईयाँ को बागो कान्हा कुण तो पिरायो जी,
म्हारे मन भायो जी ।। १ ।।

केसरियो टीको थारे, माथे पर सोवे जी,
तो अईयाँ को टीको थारे कुण तो लगायो जी,
म्हारे मन भायो जी ।। २ ।।

मोर मुकुट में थारे, सोवे किलंगी जी,
तो अईयाँ को सोवणो सो कुण तो सजायो जी,
म्हारे मन भायो जी ।। ३ ।।

''हर्ष'' सलूणो देखो, सज धज के बैठ्यो जी,
तो थारो यो रूप सुहाणो, भगतां न सुहायो जी,
म्हारे मन भायो जी ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(खाटू श्याम मन्दिर)

तर्ज : चान्दी जैसा रंग है तेरा...

मकराणे का खाटू वाले मंदिर तेरा विशाल,
हो गया देख निहाल मैं बाबा हो गया देख निहाल ।। टेर ।।

पूरब मुख मूरत है तेरी शोभा वरणी न जाये,
सूरज गढ़ की बारह महिने शिखर ध्वजा लहराये,
सन्मुख तेरे गोपीनाथ जी राधा संग मुस्काये,
ड्योढ़ी उपर पहरा देता माँ अंजनी का लाल ।। १ ।।

मोर छड़ी हाथों में सोहे बागा है पचरंगी,
हीरे मोती जड़े मुकुट में आभा है सतरंगी,
भांत भांत के तन पे तेरे आभुषण नवरंगी,
राजस्थानी पेचा बाबा लागे बड़ा कमाल ।। २ ।।

मंगला से लेकर के तेरी पाँच आरती होवे,
जादूगारी श्याम तुम्हारी झाँकी मन को मोहे,
मंदिर में घुसते ही सेवक सुध बुध सारी खोवे,
फूलों का श्रृंगार देख सब हो जाये मालामाल ।। ३ ।।

''हर्ष'' कोई अरदास करे और रो-रो तुझे पुकारे,
जिसका दर पे काम बना वो लगा रहा जैकारे,
गठ-जोड़े से धोक लगाने कोई आया द्वारे,
कोई करने आया जडुला ले गोदी में लाल ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(झूला)

तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर ...

मन के झूले में बैठाकर बाँधी भाव की डोर,
साँवरे तुझे झुलायें, प्रेम से डोर हिलायें ।। टेर ।।

हमने बनाया अपने, हृदय को आसन,
आन विराजो मोहन, इतना निवेदन,
मन बगिया को आज खिलादो, आ जाओ चितचोर ।।
साँवरे तुझे झुलायें... ।। १ ।।

झूला झुलाना तो है, बस इक बहाना,
मकसद हमारा मन के, भाव दिखाना,
भाव बिना काहे का झूला, कैसी रेशम डोर ।।
साँवरे तुझे झुलायें... ।। २ ।।

जिसने बनाया अपने, मन को हिण्डोला,
उसमें ही झूले मेरा, साँवरा सलोना,
''हर्ष'' कहे फिर छम छम नाचे, उसके मन का मोर ।।
साँवरे तुझे झुलायें... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : अपने पिया की मैं तो...

मैया के अंगना में डोले रे साँवरिया,
लाड लडाये सारी गूजरियां,
देखो डोले रे साँवरिया ।। टेर ।।

गोरे गोरे मुखड़े पे लट काली लटके,
टेढ़ी-मेढ़ी चाल बाँकी आड़े टेडे झटके,
हाथों में सोहे प्यारी बाँसुरिया ।।
देखो डोले रे ... ।। १ ।।

गूजरी ठिठोरी करे कान्हो मुस्काये,
बलिहारी जाये सारी लेवे रे बलायें,
लीला करे है नट नागरिया ।।
देखो डोले रे ... ।। २ ।।

गूजरी सूं बोली मैया जाओ घर जाओ,
थक जावेगो लल्लो ऐसे ना नचाओ,
माखन की लाई क्युँ तू गागरिया ।।
देखो डोले रे ... ।। ३ ।।

रोको मत मैया मैतो लाड लड़ांऊगी,
कान्हुड़ा ने ताजा ताजा माखन चटाऊँगी,
''हर्ष'' हुई रे मैं तो बावरिया ।।
देखो डोले रे ... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : जिन्दगी की यही रीत है...

मुझे कैसी फिकर साँवरे,
साथ तेरा है गर साँवरे,
मेरे होठों पे रहती हँसी,
कोई गम ना है बस है खुशी ।। टेर ।।

कितनी मुश्किल जो आये, मैं तो खिलखिलाता रहूँ,
तेरी किरपा से, विपदाओं को, दूर भगाता रहूँ,
मुझे दुनिया की परवाह नहीं,
सिवा तेरे कोई चाह नहीं ।। १ ।।

मेरे संग में जो तू है, मैं तेरे गीत गाता रहूँ,
तेरी चौखट पे, हरदम यूँ ही, श्याम आता रहूँ,
तूने थामा है दामन मेरा,
किया अहसान बाबा बड़ा ।। २ ।।

तेरी महिमा को बाबा, युँ ही गुनगुनाता रहूँ,
अपने हाथों से, साँवरिये को, रोज सजाता रहूँ,
कभी बिछडुं ना दर से तेरे,
''हर्ष'' अरमान इतने मेरे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मुझे तुमसे कुछ भी ना चाहिये ...

मुझे जग से कुछ भी ना चाहिये, मैने जग की महफिल छोड़ दी,
तेरा प्यार अब मेरी बंदगी, मैंने सारी बंदिशें तोड़ दी ।।

मैं ये भूल पाऊँ ना साँवरे, मिली मुश्किलें ऐतबार में,
मैं ये भूल पाऊँ ना मेरा दिल, यहाँ लुट गया था प्यार में,
मैंने भूल कर सब चाहतें, अब तुमसे उल्फत जोड़ दी ।।
मुझे जग से... ।। १ ।।

मेरे अपनों ने मुँह फेरा था, तब रहा गया था तरस के मैं,
तुझे पाके नजरों के सामने, अब रो दिया हुँ सिसक के मैं,
ये सुकुं जहां मेरा खो गया, मैंने अब वो गलियाँ छोड़ दी ।।
मुझे जग से... ।। २ ।।

मैं भटक रहा था आज तक, किसी हम सफर की तलाश में,
मुझे थाम लोगे तुम प्रभु, मैं खड़ा हूँ बस इस आस में,
लो भटकती कश्ति ''हर्ष'' ने, तेरी ओर दानी मोड़ दी ।।
मुझे जग से... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मुझको इस रात की तन्हाई में आवाज न दो...

मुझसे इकबार भी दरबार में ''आया ना गया''-३
कभी इक फूल भी चरणों में चढ़ाया ना गया,
आया ना गया ।। टेर ।।

मैं तेरा नाम जपुं मुझको ये फुर्सत ना थी,
तेरे बंदो से मेरे श्याम ना उल्फत ही की,
कभी गिरते हुए प्राणी को उठाया ना गया,
आया ना गया ।। १ ।।

मैं करम हीन हूँ खुदर्गज बड़ा हूँ बाबा,
आज मायुस हूँ चरणों में पड़ा हूँ बाबा,
तेरी चौखट पे कभी सर भी झुकाया ना गया,
आया ना गया ।। २ ।।

''हर्ष'' मतलब के लिये प्रेम बढ़ाया मैंने,
सिर्फ मकदस के लिये रिश्ता निभाया मैंने,
तेरी महिमा भरे नगमो को भी गाया ना गया,
आया ना गया ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : तेरा मन दर्पण कहलाये...

मेरा साँवरिया मुस्काये-२
एक नजर जो देखले इसको, इसका ही हो जाये ।। टेर ।।

भोला मुखड़ा चंचल चितवन जियरा को भरमाये,
लाख जतन कर हार गये हम छल से बच ना पाये ।।
मेरा साँवरिया मुस्काये... ।। १ ।।

मोर मुकुट तेरे शीश पे सोहे महिमा वरणी न जाये,
एक झलक जो देखले तुझको सुधबुध वो बिसराये ।।
मेरा साँवरिया मुस्काये... ।। २ ।।

अधर लगी ये तेरी मुरलिया मीठी तान सुनाये,
लट घुंघराली काली घटा सी गालों पर लहराये ।।
मेरा साँवरिया मुस्काये... ।। ३ ।।

झील से गहरे नैन तुम्हारे जादू सा कर जाये,
डूब मरे वो एक दफा जो इनमें गोता खाये ।।
मेरा साँवरिया मुस्काये... ।। ४ ।।

जित मैं देखूं उतही कान्हा मुझको नजर तू आये,
तेरे सलोने मुख मण्डल पर नजरें अटकी जाये ।।
मेरा साँवरिया मुस्काये... ।। ५ ।।

(२)

चन्दा देखा सूरज देखा दिल को तू ही भाये,
नैन निगोड़े ना माने रे तुझपे ठहर से जाये ।।
मेरा साँवरिया मुस्काये... ।। ६ ।।

तीखी अदा के तूने मोहन ऐसे तीर चलाये,
''हर्ष'' भगत अब ले इकतारा तेरे ही नगमे गाये ।।
मेरा साँवरिया मुस्काये... ।। ७ ।।

दोहा :

चन्दा ने तारों को देखा नजारों ने बहारों को देखा ।
होले से मेरे श्याम को पलकों के किनारों से देखा ।।
लाखों हसीन देखें हैं जमाने भर में हमने ।
अरे तेरे श्याम सा ना देखा हमने हजारों को देखा ।।

तरसता था दिल तेरी इक नजर के लिये ।
बस एक झलक काफी है उम्र भर के लिये ।।
ऐ श्याम मेरी नजरों से ना दूर होना तू कभी ।
सिर्फ यही एक जरिया है मेरे बसर के दिये ।।

अगर मुझको कलम दवात थमा देता ।
तो शायद मैं भी तेरी तस्वीर बना लेता ।।
कागजे दिल पे जो अक्श उभर आया तेरा ।
जोर चलता तो दिल चीर के दिखा देता ।।

श्री श्याम वन्दना

(फाल्गुन मेला)

तर्ज : चान्द चढ्यो गिगनार...

मेलो भर्‌यो विशाल बाबा,श्याम धणी के द्वार थाँसु,
घणी करां मनवार,
भगत थाने आणो है जी आणो है ।। टेर ।।

एक बरस के पाछे बाबा, श्याम को मेलो आयो जी,
सगला मिलकर खाटू जास्याँ, मन में हेत समायो जी,
ले घर कां ने लार सगला,
हो जाओ तैयार करियो, न्यूतो थे स्वीकार,
भगत थाने आणो है जी आणो है ।। १ ।।

खाटू हालो सेठ साँवरो, झाला दे र बुलावे जी,
मेले मांही आवणिया के, मन की आस पुरावो जी,
लीले रो असवार यो है,
दानी लखदातार थारा, भर देसी भण्डार,
भगत थाने आणो है जी आणो है ।। २ ।।

द्वार द्वार क्युँ भटके भाया, सांचो यो ही द्वारो जी,
बंद पड़ी तकदीर को तालो, खुल जावेगो थारो जी,
खाटू रो सरदार यो है,
जग को पालनहार भाया, मतना करो विचार,
भगत थाने आणो है जी आणो है ।। ३ ।।

(२)

''हर्ष'' कह्वे यो देव निरालो, बाबो खाटू हालो जी,
बेगा सा थे आकर लेल्यो, मोर छड़ी को झाड़ो जी,
मतना करो उवाँर बैठ्यो,
कलयुग को अवतार ऐंकी, महिमा अपरम्पार,
भगत थाने आणो है जी आणो है ।। ४ ।।

– बेटियाँ -

फूल की पंखुड़ियों सी कोमल होती हैं बेटियाँ ।
बाबुल की बगिया में खिलती, बढ़ती, पलती हैं बेटियाँ ।।

हमारी फुलवारी में एक कली बन कर तुम खिली हो ।
मगर एक ही क्षण में बेटी पराई होकर चली हो ।।

हमने तुम्हे जन्म दिया, पाला, पोसा, बड़ा किया ।
शिक्षा दी, संस्कार दिये, अपना धर्म पूरा किया ।।

पति परमेश्वर होता है उनकी आज्ञा में ही रहना ।
देवर जेठ को भाई और ननदी को बहना कहना ।।

मायके में अब तू मेहमान बन कर आयेगी ।
ससुराल ही तेरी असली जागीर कहलायेगी ।।

तेरी ससुराल मे जब शान और सम्मान से जायेगें ।
तुझे जन्म देने का फल उस वक्त बेटी पायेगें ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मेरा करमा तु, मेरा धरमा तु...

मेरा मंदिर तू, मेरी मस्जिद तू,
मेरा गिरजा तू, गुरुद्वारा तू, हो ऽऽऽऽ,
हर कदम मेरा बढ़ेगा - साँवरे दर पे तेरे,
सर झुका है सर झुकेगा, साँवरे दर पे तेरे ।। टेर ।।

मेरा सब कुछ तू है, तेरे बिना मेरा कुछ नहीं,
तू जो है तो जिन्दगी है, तू नहीं तो ''कुछ नहीं'' -२
मेरा मन उपवन खिलेगा, साँवरे दर पे तेरे ।।
सर झुका है सर .. ।। १ ।।

या खुशी हो या हो गम, बाँटता तुम संग रहुँ,
चोट भी खाऊँ दयालु, मैं किसी से ''ना कहुँ'' -२
मेरा हर आँसु गिरेगा, साँवरे दर पे तेरे ।।
सर झुका है सर .. ।। २ ।।

मेरी जीवन डोर ये, अब तुम्हारे हाथ है,
''हर्ष'' को परवाह है क्या, जब तुम्हारा ''साथ है''-२
मेरा ये जीवन ढलेगा, साँवरे दर पे तेरे ।।
सर झुका है सर .. ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मुझे प्यार की जिन्दगी...

मेरी झोपड़ी में आना ही होगा,
प्रेमी हूँ रिश्ता निभाना ही होगा ।। टेर ।।

जमाने के फरजी, रिश्ते हैं तोड़े,
तेरे संग कितने, नाते हैं जोड़े,
मुझे बेटा कह कर, बुलाना ही होगा ।।
मेरी झोपड़ी में... ।। १ ।।

तु जब भी बुलाये, तेरे दर पे आऊँ,
हुकुम श्याम तेरा, मैं हरदम बजाऊँ,
कदम मेरे घर में, बढ़ाना ही होगा ।।
मेरी झोपड़ी में... ।। २ ।।

तुही ''हर्ष'' मुझमें, तु ही आत्मा है,
तुही मेरी मंजिल, तु परमात्मा है,
ये अपनों से परदा, हटाना ही होगा ।।
मेरी झोपड़ी में... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : मैं जिन्दगी का साथ निभाता...

मैं साँवरे को मीत बनाता चला गया,
हर रस्म आपकी मैं निभाता चला गया ।। टेर ।।

भटके हुए हैं जो यहाँ भूले हैं रास्ते-२
मंजिल पे बाहें थाम के लाता चला गया ।।
मैं साँवरे को... ।। १ ।।

ऐसे मिले जो चाह के दरपे न आ सके-२
उनको तुम्हारा दीद कराता चला गया ।।
मैं साँवरे को... ।। २ ।।

महरुम थे जो अब तलक चौखट से आपकी-२
खाटू की राह उनको दिखाता चला गया ।।
मैं साँवरे को... ।। ३ ।।

लो चल पड़ा है ''हर्ष'' अब तो राहों पे तेरी-२
हारे हुए का साथ निभाता चला गया ।।
मैं साँवरे को... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : ये झुके झुके नैना..

ये काली काली जुल्फें, युं मुखड़े पे छाई,
ज्युं कलियों पे भँवरे दिवाने हो गये ।। टेर ।।

मृदु मंद मधुर मुस्कान ओ कान्हा, प्यारी लागे,
घनघोर घटा के बीच ज्युँ चंचल, चपला भागे,
तेरे नैनो की धार, हुई हिवड़े के पार,
श्याम पल में ही लाखों फसाने हो गये ।।
ये काली काली... ।। १ ।।

ये रूप की गागर मोहन ना ऐसे, छलकाओ,
जो बुझ ना सके घनश्याम ना ऐसी, प्यास बढ़ाओ,
तेरो रूप का दीदार, सारे करे बार बार,
तुझे देखने के अब तो बहाने हो गये ।।
ये काली काली... ।। २ ।।

तेरे काजल वाले नयन अदायें, बांकी टेढ़ी,
ये मनमोहक मेरे श्याम सजीली, झांकी तेरी,
तेरा साँवला निखार, गया दिल मै तो हार,
''हर्ष'' आशिक हम तेरे पुराने हो गये ।।
ये काली काली... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

दोहा- राधे तू बड़ भागिनी कौन तपस्या कीन्ह ।
तीन लोक को सांवरो तेरे ही आधीन ।।

पंजाबी तर्ज : जूती कसूरी आई ना पूरी ..

राधा किशोरी, चरणां दी चेरी,
बण जावां तेरी मैनु, अपणा बणा ।। टेर ।।

मोह माया दा त्याग करादे बरसाणे बिच वास करां,
इक बर अपनी दासी बणाले सेवा मैं तेरी खास करां ।।
राधा किशोरी... ।। १ ।।

सुबह सबेरे उठकर राधे टहल करां तेरे महलां दी,
चुन चुन कलियां बागां दे विच माला पिरोआं तेरी फूलां दी ।।
राधा किशोरी... ।। २ ।।

जमना दा जल लेके आवां पैड़ी मैं धोआं तेरे मंदरा दी,
मंदर विच हुड़दंग करे ना करां रुखाली बैठी बंदरा दी ।।
राधा किशोरी... ।। ३ ।।

धन दौलत दी चाह नहीं बस ''हर्ष'' तू इतना कर देणा,
जद जद होवे आरती तेरी चंवर दी सेवा दे देणा ।।
राधा किशोरी... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : गाड़ी वाले मुझे बिठाले...

रंग बदलती इस दुनिया का कैसे करुँ एतबार,
बतादे साँवरिया,
वक्त पड़े पर बदल क्युँ जाता प्रेमी का व्यवहार,
बतादे साँवरिया ।। टेर ।।

मानव तन देकर तूने, ऐसा क्यूँ स्वभाव दिया,
प्रेम दिखाया जिसने भी, उसका ही विश्वास किया,
समझ न पाया क्युँ रखते सब, मतलब का सरोकार,
बतादे साँवरिया ।। १ ।।

दिल में ईर्ष्या भरी हुई, श्याम के प्रेमी कहलाते,
बाबा तेरी राहों पर, क्युँ ना हम सब चल पाते,
क्युँ ना समझा सबकी मंजिल, है तेरा दरबार,
बतादे साँवरिया ।। २ ।।

तुझसा प्रेमी पाकर भी, प्रेम कभी ना सीख सके,
कभी किसी को थाम लिया, कहीं किसी को छोड़ चले,
''हर्ष'' तुम्हीं से सीख सके ना, क्या होता है प्यार,
बतादे साँवरिया ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : तुझे चान्द के बहाने देखूँ...

रुत फागणिये की आई कि मेलो थारो
खूब भरसी, साँवरिया ।। टेर ।।

थारे गठ जोडे सूँ आस्याँ,
थारे चरणां धोक लगास्याँ,
कि पलक उघाड़्याँ सरसी-२,
साँवरिया.... ।। १ ।।

ग्यारस की रात जगास्याँ,
बारस ने धोक लगास्याँ,
कि सिर पर हाथ धरसी -२,
साँवरिया.... ।। २ ।।

थारी सवामणी करवास्याँ,
थारे छप्पन भोग लगास्याँ,
कि श्याम थाने जिम्याँ सरसी-२,
साँवरिया.... ।। ३ ।।

कहवे ''हर्ष'' म्हें पैदल आस्याँ,
थारे शिखर निशान चढ़ास्याँ,
कि मेले में बुलायाँ सरसी-२,
साँवरिया.... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : थारी मोर छड़ी...

शरणागत की श्याम बाबा लाज बचाओ जी,
थारी मोर छड़ी लहराओ जी ।। टेर ।।

मझधार में बाबा, अटकी पड़ी नैया, थे बेड़ो पार करो,
लाखां ने तारया हो, बेटे ने भूल्या क्युँ, प्रभु उपकार करो,
भटक्योड़ा ने श्याम आके राह दिखाओ जी ।।
शरणागत की... ।। १ ।।

बरसां सुं बंद है, तकदीर को तालो, दयालु खोल द्यो,
चरणां बिठा करके, दो बैण मीठा सा, थे मुख सुं बोल द्यो,
टाबरियां के श्याम सिर पे हाथ फिराओ जी ।।
शरणागत की... ।। २ ।।

हालात को मार्‌यो, दुखड़ा सुं मैं हार्‌यो, मेरो उद्धार करो,
थारो सहारो है, थारे ''हर्ष'' ने इब तो, धणी स्वीकार करो,
हारयोड़ां की श्याम थे ही जीत कराओ जी ।।
शरणागत की... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : आज बिरज में होरी रे रसिया...

शीश साँवरिया के सोवे रे पगड़ी,
सोवे रे या मन मोवे रे पगड़ी ।। टेर ।।

जगत पति ने मात यशोधा,
रस्सी बांध, उखल सुं जकड़ी ।।
शीश साँवरिया के... ।। १ ।।

काली कमलिया काँधे धर के,
धेनु चरायबा ने, चाल्यो ले लकड़ी ।।
शीश साँवरिया के... ।। २ ।।

मटकी भरके गुजरिया चाली,
देख छवि, छलकी जल गगरी ।।
शीश साँवरिया के... ।। ३ ।।

कुंज गलिन में रास रचावे,
हाथां बीच, मुरलिया पकड़ी ।।
शीश साँवरिया के... ।। ४ ।।

''हर्ष'' हरि की मोहिनी झाँकी,
निरख दिवानी, बिरज की नगरी ।।
शीश साँवरिया के... ।। ५ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : चान्द को क्या मालुम ...

श्याम तू क्या जाने, खड़ा है कोने में इक दास,
हसरत से वो, तुमको देखे, करे यही अरदास ।। टेर ।।

आँख से आँसु वो ढलकाये, बात जिया की ''कह नहीं पाये''-२,
कैसे बताये क्युँ हैं उसका, मनवा आज उदास ।।
श्याम तू क्या जाने... ।। १ ।।

फुसर्त हो सुनले अफसाना, चोट जिगर की ''देखले कान्हाँ''-२,
जान के तुमको अपना बाबा, आया तेरे पास ।।
श्याम तू क्या जाने... ।। २ ।।

देख खड़ा है एक सवाली, आँख में आसुँ ''दामन खाली''-२,
गम के थपेड़े खाके हो गया, सेवक आज हताश ।।
श्याम तू क्या जाने... ।। ३ ।।

भीड़ बड़ी है पलक उठाओ, मेरी ओर भी ''नजर घुमाओ''-२,
''हर्ष'' सुना है कभी न लौटा, दर से कोई निराश ।।
श्याम तू क्या जाने... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : श्याम थारी ओल्यूँ आवे जी...

श्याम थांपे केसर छिड़कां जी -२,
बनड़ा सा लागो आज साँवरा, थाने निरखाँ जी ।। टेर ।।

काना कुण्डल सोहे थारे, गल वेजन्ती हार, साँवरा..
मोर छड़ी हाथां में सोहे, खूब सज्यो सिणगार, साँवरा..
नैन निगौड़ा सेठ साँवरा, थाँपे अटक्या जी ।।
श्याम थांपे केसर... ।। १ ।।

केसर तिलक बिराजे माथे, सिर घुंघराला बाल, साँवरा..
थाने बिठाके लीलो चाले, तिरछी-तिरछी चाल, साँवरा..
उछल-उछल कर छेलो मारे, जोर का ठुमका जी ।।
श्याम थांपे केसर... ।। २ ।।

बाँकी अदा सूं थे इतराओ, होठां पर मुस्कान, साँवरा..
प्यारी-प्यारी मुरली बजाओ, छेड़ो मीठी तान, साँवरा..
रूप सलूणो देख श्याम थारो, सेवक भटक्या जी ।।
श्याम थांपे केसर... ।। ३ ।।

कालो टीको आज लगावाँ, लेवां निजर उतार, साँवरा..
''हर्ष''भगतथारालाडलडावे,छिड़केइतरफुहार,साँवरा..
सगला मिलकर आज करां, फूलां की बरखा जी ।।
श्याम थांपे केसर... ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : इकवार चले आओ- वो सारे गिले शिकवे...

सरकार सुनो मेरी - दातार सुनो मेरी,
फरियाद करुँ दिल से -२, इक बार सुनो मेरी ।। टेर ।।

मतलब की दुनिया है, सुनके भी न सुनती है,
दरदी की मजबूरी, बिल्कुल न समझती है,
हमदर्द तुझे जाना-२, क्युं तुमने निगाह फेरी ।।
सरकार सुनो मेरी...।। १ ।।

गर तुम ना सुनो मेरी, चौखट पर रो दूँगा,
तेरे पावन चरणों को, अश्कों से भिगो दूँगा,
बिगड़े हालात मेरे-२, कर महर नजर तेरी ।।
सरकार सुनो मेरी...।। २ ।।

मैं हूँ कमजोर प्रभु, तुझ पर ही जोर मेरा,
इक तेरे सिवा जग में, दूजा ना और मेरा,
तेरे ''हर्ष'' की सुन बाबा, अब और ना कर देरी ।।
सरकार सुनो मेरी...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(झूला)

तर्ज : माई नी माई ...

सावन में भगतों ने मिलकर झूला आज सजाया,
बड़े प्रेम से झूला झूलन खाटू वाला आया,
धोक लगाओ जी, मंगल गाओ जी ।। टेर ।।

आओ भगतो श्याम प्रभु के स्वागत में बिछ जायें,
बड़े जतन से डोर हिलाकर झूला इन्हें झुलायें,
भाव भरा जब प्रेम संदेशा हमने इन्हें भिजाया ।।
बड़े प्रेम से ...।। १ ।।

अम्बर से झरती बूंदों का ठण्डा ठण्डा पानी,
भगतों के घर झूला रहा है देखो शीश का दानी,
लगता है ये झूला मेरे बाबा के मन भाया ।।
बड़े प्रेम से ...।। २ ।।

झूले की ये रस्म दिवाने सदा निभाते जायें,
इसी बहाने ''हर्ष'' हमेशा इन्हें बुलाते जायें,
प्रेम भरा भगतों का निवेदन बाबा टाल न पाया ।।
बड़े प्रेम से ...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : नि माई मेरी मंदरा दे बुअे अज खोल...

साँवरिया मैं तो थारी शरण में आयो,
सुरगां सो सुख पायो ।। टेर ।।

शरणागत की लाज बचाल्यो,
टाबरिये ने कंठ लगाल्यो,
समझो मतना परायो ।। १ ।।

इक बर मेरे कानी झांको,
गुण भी देखो दोष क्युँ आंको,
मायत थाने बणायो ।। २ ।।

''हर्ष'' कहवे बेगा सा आओ,
दरदी को थे रोग मिटाओ,
दास घणो दुख पायो ।। ३ ।।

मैं, बेबस तकदीर का मारा, किसको दर्द दिखाऊँ ।
दुखड़े कौन हरे अब मेरे, मै किसके दर पर जाऊँ ।।
जो देखुं, मैं अपने करमों को, तो अँखियां मेरी बरसे ।
ओ दाता, अब किरपा कर, ये, तरसे-तरसे-तरसे ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : तेरे गोरे गोरे गाल हमें मार न डाले...

दोहा - सांस सांस से जपले बंदे श्याम प्रभु का नाम ।
भाव भरी सांसो की माला स्वीकार करेगें श्याम ।।

सांसो का बना के हार, बाबा को चढ़ादे,
भावों का पिरो के तार, बाबा को चढ़ादे ।। टेर ।।

सांसों का ठिकाना क्या है, धोखा दे जायेगी,
इक पल आये दूजे, पल रूक जायेगी,
तेरी सांसो का उपहार, बाबा को चढ़ादे ।।
सांसो का बना के... ।। १ ।।

जिसने ये बख्शी सांसे, उसके ही नाम कर,
परलोक का भी प्यारे, थोड़ा इंतजाम कर,
हो जायेगा भव पार, बाबा को चढ़ादे ।।
सांसो का बना के... ।। २ ।।

किसने गिनी है सांसें, कितनी ये आयेगी,
एक सांस बंदे तुझको, श्याम से मिलायेगी,
ऐ ''हर्ष'' तेरे उद्‌गार, बाबा को चढ़ादे ।।
सांसो का बना के... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : सीताराम सीताराम सीताराम कहिये...

सुबह शाम, आठो याम, श्याम नाम जपना,
नाम के सहारे भव पार प्यारे तरना ।। टेर ।।

तेरा मेरा त्याग के तू साँवरे का नाम ले,
गम ना सताये मेरे श्याम तुझे थाम ले,
जप तप नेम सत्संग में तू रमना ।। १ ।।

दीन दुखियों के गर काम जो तू आयेगा,
हारे के सहारे मेरे सांवरे को पायेगा,
नेकी नेकी करना बदि को तू तजना ।। २ ।।

बाँट ले किसी का बंदे दुख बँट जायेगा,
टुकड़ों में बँट करके दुख घट जायेगा,
दुखड़े मिटाके कर सुख की तू रचना ।। ३ ।।

दिल ना दुखाना कभी किसी बेजुबान का,
दण्ड देगा श्याम तुझे तेरे अभिमान का,
''हर्ष'' दया का भाव दिल में तू रखना ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : भगत के वश में है भगवान...

साँवरिया झंझट बड़े अपार,
महंगाई के दौर में मेरा, कैसे चले परिवार ।। टेर ।।

एक दिन मैंने सोचा, आज मंदिर जाऊँगा,
शीश के दानी का मैं, जाके दर्शन पाऊँगा,
झमेले इतने बाबा, समय का ध्यान रहा ना,
मुझको मंदिर है जाना, इसका भी ज्ञान रहा ना,
आनन फानन मंदिर पहुँचा, बंद मिले पट द्वार ।। १ ।।

सोचा गददी में निश दिन, नाम तेरा जपुँगा,
बैठ कर सबसे पहले, तेरा सुमिरन करुँगा,
जाके गददी बुहारी, धूप मैं खेवन लागा,
ध्यान धर के मैं तेरा, नाम तेरा लेवन लागा,
इतने मे ही लेने तकादा, आ गया साहुकार ।। २ ।।

नहीं मैं दान कराऊँ, नहीं कोई पुण्य कमाऊँ,
कभी गंगा जी जाकर, नहीं मैं डुबकी लगाऊँ,
एक दिन मैंने ठानी, घर में ही ध्यान धरूँगा,
सांवरे नाम की तेरे, रोज इक माला जपुंगा,
हाथ में ज्योंही माला पकड़ी, आ गये रिश्तेदार।। ३ ।।

(२)

जिसे देखुं मैं वो ही, तेरा कीर्तन करवाता,
महंगे पकवानों का वो, सांवरे भोग लगाता,
मेरा भी मन ललचाये, तेरा श्रृंगार कराऊँ,
मैं भी औरों की भान्ति, तेरा भण्डारा लगाऊँ,
बजट बनाऊँ तो खुद को मैं, पाता हूँ लाचार ।। ४ ।।

कहा गीता में तुमने, कर्म ही धर्म तुम्हारा,
जैसे रखुंगा तुझको, वैसे ही चले गुजारा,
तेरे उपदेशों पर ही, आज मैं चल रहा हूँ,
भूल कर फल की चिन्ता, काम मैं कर रहा हूँ,
तेरी दिखाई राहों पर मैं, चलता पालनहार ।। ५ ।।

तूने धरती पर भेजा, बड़ा उपकार किया है,
मगर ये सोचो भगवन, पीछे परिवार दिया है,
अगर ना काम करूँ तो, कैसे परिवार चलाऊँ,
पेट मैं सबका भर के, साँवरे भोजन पाऊँ,
काम ही पूजा मेरी, काम ही मेरा वंदन,
काम करता हाथों से, साँसो से तेरा सुमिरन,
मैं इतना व्यस्त रहूँ पर, तुझे हर पल ही ध्याया,
''हर्ष'' मैं जान गया हूँ, तुने क्यूँ दर्श दिखाया,
तन ये लगाया धन के पीछे, मन तुझमें सरकार ।। ६ ।।

श्री श्याम वन्दना

तर्ज : हम थे जिनके सहारे...

हमको तेरा सहारा, साथी तू है हमारा,
अटके जब भी ये नैया, देता तूही किनारा ।। टेर ।।

तू सभी कुछ हमारा, बंधु भी है सखा है,
तेरे दर पे कन्हैया, ''हम को सब कुछ मिला है''-२ ।।
हमको तेरा सहारा... ।। १ ।।

रेत के हम घरोदें, ठोकरों में पड़े हैं,
तेरे दम पे दयालु, ''तूफानों में खड़े हैं'' -२ ।।
हमको तेरा सहारा... ।। २ ।।

ये तो करमों का लेखा, जो किया वो मिलेगा,
तेरी किरपा से दाता, ''भूखा वो ना रहेगा'' -२ ।।
हमको तेरा सहारा... ।। ३ ।।

''हर्ष'' पे खाटू वाले, तेरी दया जो रहेगी,
इस जिन्दगी में कभी भी, ''कोई कमी ना रहेगी'' -२ ।।
हमको तेरा सहारा... ।। ४ ।।